

Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَأْتَمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ
فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ
مِنَ الْهَدْيِ ج

(सूर: बकर: , आयत : 197)

अनुवाद : "और अल्लाह के लिए हज और उमरा को पूर्ण करो। फिर यदि तुम रोक दिए जाओ, तो जो भी कुर्बानी उपलब्ध हो, उसे (कुर्बान कर दो)।"

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ نَحْمَدُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ وَعَلَى عِبْدِهِ الْمَسِيحِ الْمَوْعُودِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ

वर्ष- 10

अंक - 22

मूल्य

600 रुपए

वार्षिक



संपादक

शेख मुजाहिद

अहमद

उप संपादक

सय्यद मुहियुद्दीन

फ़रीद

अखबार-ए-अहमदिया

रुहानी खलीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

1 जुलू हज्जा, 1446 हिज़्री कमरी, 29 हिज़रत 1404 हिज़्री शम्सी, 29 मई 2025 ई.

ख़ुत्ब: जुमअ:

यदि हम दुआ करने के अपने अधिकार को पूरा करते हुए दुआ पर भी ध्यान देंगे, तभी सफलता मिलेगी...

हमारा एकमात्र हथियार दुआ है।

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि एक योद्धा के ला इलाहा इल्लल्लाह कहने के बावजूद मारे जाने की घटना सुनने के बाद, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझसे कहा:

أَفَلَا شَقَقْتُ عَنْ قَلْبِهِ حَتَّى تَعْلَمَ أَقَالَهَا أَمْ لَا:

तुमने उसका दिल क्यों नहीं फाड़ दिया ताकि तुम जान सको कि उसने यह बात दिल से कही थी या नहीं? वह मुझसे यह बात तब तक दोहराते रहे जब तक कि मुझे यह इच्छा नहीं हुई कि काश मैंने उसी दिन ही इस्लाम स्वीकार कर लिया होता।

आज के मौलवियों का मानना है कि उन्होंने अहमदियों के दिलों को फाड़ दिया है, और इसलिए अहमदियों को शहीद करना और उन पर अत्याचार करना जायज़ है। अल्लाह उनकी पकड़ के भी समान करे पाकिस्तान में आज के मौलवी और उनके अनुयायी स्वर्ग जाने की बात करते हैं, कहते हैं कि यदि तुम अहमदियों को मार दोगे तो स्वर्ग जाओगे, लेकिन वे यह नहीं जानते कि उनके कार्यों के कारण उन्हें सर्वशक्तिमान अल्लाह की ओर से दंड का सामना करना पड़ रहा है। देर-सवेर अल्लाह उन्हें पकड़ लेगा।

हिजरी कैलेंडर के सातवें और आठवें वर्ष की कुछ लड़ाइयों और अभियानों के संदर्भ में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के धन्य जीवन का एक मार्मिक विवरण।

पाकिस्तान में अहमदिया समुदाय के खिलाफ हाल ही में बढ़ी शत्रुता की लहर के जवाब में दुआ

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद खलीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनसिहिल अज़ीज़, दिनांक 18 अप्रैल 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिरे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ. بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ. الْحَمْدُ لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ. الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ. مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ.
إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ. صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّالِّينَ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमकी जीवनी के हवाले से अन्य लड़ाइयों और अभियानों का उल्लेख करूंगा। इतिहास में एक हज़रत उमर बिन अल-खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो का तुरबा की ओर जुलूस का भी उल्लेख है। यह घटना शाबान माह 7 हिजरी में घटी। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत उमर

बिन अल-खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को हवाज़िन जनजाति की ओर, तुरबाह नामक स्थान की ओर भेजा। तुरबाह, सना और नजरान के बीच राजमार्ग पर स्थित है, जो मदीना से लगभग 333 मील दूर है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हो) को तीस लोगों के साथ यहाँ भेजा। इस प्रतिनिधिमंडल को भेजने का कारण यह था कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को तुरबा के लोगों से इस्लाम के विरुद्ध षड्यंत्रों के बारे में जानकारी मिली थी।

(इब्र साद द्वारा अल्-तब्कातुल् कुब्रा से लिया गया, खंड 2, पृष्ठ 89, 90, दारुल अल् कुतुब अल्-इल्मिया, बैरुत) (गज़वात वा सराया, पृष्ठ 391, फ़रियाद पब्लिशर्स, साहीवाल)

जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यात्रा शुरू की तो उनके साथ बनू हिलाल

का एक व्यक्ति मार्गदर्शक के रूप में था। साथी रात में यात्रा करते थे और दिन में छिप जाते थे। जब तुरबा के लोगों ने यह खबर सुनी तो वे वहां से भाग गये। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उनके क्षेत्र में पहुंचे लेकिन वहां कोई नहीं मिला, इसके बजाय उन्होंने उन्हें ऊंचाइयों पर चढ़ते हुए पाया। वे पहाड़ों पर चले गए थे और अपने सारे पशुओं को भी अपने साथ ले गए थे। अतः हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मदीना लौट आये। जब वे धुल्-जद्र पहुंचे, जो कि मदीना से छह से सात मील दूर कुबा के बाहरी इलाके में एक चरागाह है, तो बनू हिलाल के व्यक्ति ने हज़रत उमर से कहा: क्या आप बनू खथम के दूसरे समूह पर हमला करेंगे? वे सभी अपने क्षेत्र में सूखे के कारण यहां आये हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे ऐसा करने का आदेश नहीं दिया है। उसने मुझे केवल तुरही के स्थान पर हवा के साथ जिहाद लड़ने का आदेश दिया था। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मदीना लौट आये।

(शरह अल-जरकानी अली अल-मवाहिब अल-लुदनिया, खंड 3, पृष्ठ 304, 305, दारुल किताब अल-इल्मिया, 1996) (फरहंग सीरत, पृष्ठ 85, ज़वार अकेडमी से लिया गया)

क्योंकि ये वे लोग थे जो शरारत कर रहे थे यहीं पर यह आरोप भी लगाया जाता है कि मुसलमान अनुचित हमले करते थे।

यह भी ग़लत साबित हुआ। तब एक हज़रत बशीर बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो का फ़दक में बनू मुर्रा की ओर सफ़र है। यह अभियान हज़रत बशीर बिन साद के नेतृत्व में शाबान 7 हिजरी में हुआ था। हज़रत बशीर का उपनाम अबू नुमान था। साद बिन थलाबा उनके पिता थे। वह खजराज जनजाति से संबंधित थे। हज़रत बशीर बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो इस्लाम-पूर्व काल में लिखना जानते थे। यह वह समय था जब अरब में बहुत कम लोग लिखना जानते थे। उन्होंने अकाबा में निष्ठा की शपथ ली, जहां सत्तर अंसार उनके साथ शामिल हो गये। उन्होंने बद्र, उहुद, खंदक और अन्य सभी लड़ाइयों में पवित्र पैगंबर (शांति उन पर हो) के साथ भाग लिया।

हज़रत बशीर बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो अंसार के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने साक़ीफ़ा बनू सईदा के दिन हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो के प्रति निष्ठा की शपथ ली थी। हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो की खिलाफ़त के दौरान, वर्ष 12 हिजरी में, हज़रत बशीर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत खालिद बिन वालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ ऐन अल-ताम्र की लड़ाई में भाग लिया और शहीद हो गए।

(शरह ज़रकानी, खंड 3, पृष्ठ 305-306, दारुल किताब अल-इल्मिया, बैरुत) (अल-इस्तिबाब, खंड 1, पृष्ठ 252-253, दारुल किताब अल-इल्मिया, बैरुत)

ऐन अल-ताम्र का परिचय यह है कि यह कूफ़ा के निकट एक स्थान है। मुसलमानों ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की खिलाफ़त के दौरान हिजरी सन् के 12वें वर्ष में इस क्षेत्र पर विजय प्राप्त की।

(मज्मा बुलदान खंड 4, पृष्ठ 199)

खैर, मैं पहले जिस सरिया का वर्णन कर रहा था, उसके बारे में। इसका विवरण यह वर्णित है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हज़रत बशीर बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो को तीस साथियों के साथ फ़दक में बनू मुर्रा के पास भेजा। फ़दक खैबर के पास स्थित है, जो मदीना से छह रात की यात्रा पर है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, यह स्पष्ट होना चाहिए कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन अभियानों या युद्धों पर लोगों को तब भेजते थे जब उन्हें खबर मिलती थी कि लोग इस्लाम के खिलाफ़ षड्यंत्र कर रहे हैं। बहरहाल, साथी वहां पहुंचे और बकरी चराने वालों से मिले तथा उनसे बानू मुर्रा के बारे में पूछा। चरवाहों ने उन्हें बताया कि बानू मुर्रा उनकी घाटी में थे और वे झरने पर नहीं आये थे। साथियों ने अपनी भेड़-बकरियों को इकट्ठा किया और मदीना की ओर वापस चल पड़े। बानू मुर्रा की पुकार बुलंद की गई। उन्होंने घटना की घोषणा की और बताया कि मुसलमानों ने हमारा सामान छीन लिया है। इस पर बनू मुर्रा के लोग वापस लौट गये और रात में मुसलमानों का सामना बनू मुर्रा की विशाल सेना से हुआ। उन्होंने एक बड़ी सेना के साथ मुसलमानों पर हमला किया। साथियों ने सारी रात तक गोलीबारी जारी रखी जब तक उनके तीर समाप्त नहीं हो गए। सुबह जब मुसलमान जागे तो बनू मुर्रा ने मुसलमानों पर फिर हमला किया और हज़रत बशीर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथियों को शहीद कर दिया। हज़रत बशीर इन लोगों से तब तक भयंकर युद्ध करते रहे जब तक कि वे घायल होकर गिर नहीं पड़े, उनके टखने में चोट लग गई और यह मान लिया गया कि बशीर की मृत्यु हो गई है। फिर बानू मुर्रा अपनी बकरियों और भेड़ों के साथ वापस चले गए। मुसलमानों ने जो सारा सामान लूटा था, उसे शहीद करके इन लोगों

ने अपना सामान वापस ले लिया। हज़रत बशीर रात तक इन शहीदों के बीच रहे। उन्होंने साहस जुटाया और फ़िदक चले गए और वहां यहूदियों के साथ कुछ दिन तक रहे जब तक कि उनके घाव ठीक नहीं हो गए और वे मदीना लौट आए।

(शरह अल-जरकानी अली अल-मवाहिब अल-दुनिया खंड 3, पृ. 305, 306, दारुल किताब अल-इल्मिया 1996), (फरहंग सीरत, पृ. 225, ज़वार अकेडमी), (दौराह मारीफ, पृ. 474, बज़्म इकबाल, लाहौर)

तब एक मयफ़ाह की ओर हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्ला लैथी का परिवार इसका उल्लेख किया गया है। यह घटना रमज़ान 7 हिजरी में घटित हुई।

(सब्बुल हुदा वल् रिशाद, खंड 6, पृष्ठ 133, दारुल अल् कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह लैथी हिजाज़ के लोगों में से थे। वह मक्का की विजय के समय उपस्थित थे और मक्का की विजय से पहले अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उन्हें जासूस के रूप में आगे भेजा था। हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हो के शासनकाल के दौरान, वह खुरासान के गवर्नर थे। एक परंपरा के अनुसार, उन्होंने कादिसिया की लड़ाई में भी भाग लिया था।

(ओसोदुल्ल ग़बाह, खंड 4, पृष्ठ 321, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

(अल-इसाबा फ़ि तमीज़ अल-सहाबा, खंड 5, पृष्ठ 243, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

इब्र साद ने लिखा है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ग़ालिब रज़ियल्लाहु अन्हो को बनू अब्दुल और बनू अब्द बिन थलाबा के पास भेजा जो मेफा में थे। यह स्थान मदीना से नज्द की ओर छियानबे मील दूर था। बनू अब्दुल और बनू अब्द ने मुसलमानों के खिलाफ़ नकारात्मक प्रचार करके लोगों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया था ताकि अरब पार्टियों की तरह आगे भी कार्रवाई की जा सके। मुसलमानों पर हमला। इब्र हिशाम ने हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्ला अल-लैथी के बनू मुर्रा की ओर अभियान का वर्णन किया है, जो हुरका के सहयोगी थे। इमाम बुखारी ने इस श्रृंखला से संबंधित अध्याय का शीर्षक रखा है: पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसामा इब्र ज़ैद को जुहैना के जलाने के लिए भेजने पर अध्याय। अर्थात्, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो को जुहैना के हुरकत कबीले में भेजा। इससे पता चलता है कि इस कबीले के नेता हज़रत उसामा बिन ज़ैद थे, लेकिन बुखारी के टीकाकार अल्लामा इब्र हजर ने बुखारी पर अपनी टिप्पणी में लिखा है कि हज़रत उसामा बिन ज़ैद के शब्दों से कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हमें हुरका कबीले की ओर भेजा। इस बात का कोई सबूत नहीं है कि वह सीरिया में सेना का कमांडर था, और यह भी साबित नहीं हुआ है कि उसामा बिन ज़ैद को उसके पिता ज़ैद के मुता की लड़ाई में शहीद होने से पहले सेना का कमांडर नियुक्त किया गया था। इससे यह साबित नहीं होता कि वे उस समय अमीर बनाये गये थे। इस कारण से, मघाजी लोगों के शब्द अधिक प्रासंगिक हैं। यह अधिक विश्वसनीय और स्वीकार्य है कि इस समूह के नेता हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्ला अल-लैथी थे।

हालाँकि, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ग़ालिब को एक सौ तीस साथियों के साथ भेजा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक स्वतंत्र दास हज़रत यासिर उनके मार्गदर्शक थे। मुसलमानों ने एक साथ उन पर हमला किया और उनकी बस्तियों के केंद्र तक पहुंच गये। जो भी लड़ने आया उसे उन्होंने मार डाला और युद्ध की लूट का माल, भेड़-बकरियों सहित, मदीना ले आए, लेकिन किसी को बंदी नहीं बनाया।

(अल-तब्कातुल कुब्रा, खंड 2, पृष्ठ 91, दारुल किताब अल-इल्मिया, बैरुत)(फरहंग सीरत, पृष्ठ 56, ज़वार अकेडमी)(गज़वात और सराया, पृष्ठ 396, फरीदिया पब्लिशर्स, साहिवाल) (अल-सीरत अल-नबाविया इब्र हिशाम द्वारा, पृष्ठ 879, दारुल किताब अल-इल्मिया, बैरुत)(उद्धृत फतह अल-बारी, खंड 7, पृष्ठ 659, आराम बाग, कराची) (सहीह अल-बुखारी, अल-मगाज़ी की पुस्तक, पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उसामा बिन ज़ैद को सामने से जलाने के लिए भेजने पर अध्याय) इब्र साद ने लिखा है कि यह वही घटना है जिसमें हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो ने ला इलाहा इल्लल्लाह कहने वाले मिरदास बिन नुहैक को मार डाला था।

(सब्बुल हुदा वल् रिशाद, खंड 6, पृष्ठ 133, 140, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत से लिया गया) (अल-तब्कातुल कुब्रा, खंड 2, पृष्ठ 91, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

बुखारी में इस घटना का वर्णन हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हमें हुरका जनजाति के पास भेजा। हमने सुबह उनसे मुलाकात की और उन्हें हरा दिया, और मैं और

अंसार के एक आदमी ने उनमें से एक का पीछा किया। जब हमने उस पर विजय प्राप्त कर ली तो उसने कहा, "अल्लाह के अलावा कोई उपास्य नहीं है।" अंसारी रुक गया, लेकिन मैंने उसे अपने भाले से तब तक मारा जब तक वह मर नहीं गया। फिर जब हम वहाँ पहुँचे तो यह खबर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) तक पहुँची।

उसने कहा, हे उसाम! क्या तुमने उसे इसलिए मार डाला क्योंकि उसने कहा था, "अल्लाह के अलावा कोई उपास्य नहीं है!"

मैंने कहा कि वह अपना बचाव कर रहा था, लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इसे दोहराते रहे। आप ने यह बात इतनी बार दोहराई कि तुमने उसे मार डाला। मैं तो यहाँ तक चाहता था कि काश मैं उस दिन से पहले कभी मुसलमान बनता।

(सही अल-बुखारी, अल-मगाज़ी की किताब, पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पुनरुत्थान पर अध्याय, उसामा...हदीस 4269)

मुस्लिम ने इस परंपरा को इस प्रकार दर्ज किया है: अफला शक्रकत को अपने दिल से तब तक याद किया जब तक उसे पता नहीं चला, उसने कहा था या नहीं? आपने उसका दिल क्यों नहीं चीर दिया ताकि आप जान सकें कि उसने यह बात दिल से कही थी या नहीं? वह मुझसे बार-बार यही बात दोहराता रहा और मैंने तो यहाँ तक चाहा कि काश मैंने उसी दिन इस्लाम धर्म अपना लिया होता।

(सहीह मुस्लिम किताब अल-इमान अनुवादक खंड 1 पृष्ठ 88)

लेकिन आज के मौलवियों का मानना है कि उन्होंने अहमदियों के दिलों को तोड़ दिया है, और इसलिए अहमदियों को शहीद करना और उन पर अत्याचार करना जायज़ है। अल्लाह तआला उन्हें पकड़ने का साधन भी प्रदान करे।

एक परंपरा में कहा गया है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने मिरदास के परिवार को उसके खून के पैसे देने का आदेश दिया और उसकी संपत्ति उन्हें लौटा दी।

(सबुल्लु हुदा, खंड 6, पृष्ठ 193, दारुल अल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत से लिया गया) पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उस व्यक्ति के साथ ऐसा व्यवहार किया, जिसने ला इलाहा इल्लल्लाह कहा था, मानो वह पहले भी लड़ चुका हो, लेकिन उन्होंने कहा, "चूंकि उसने ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ा है, इसलिए उसके खून के पैसे उसके परिवार को दे दो और उसकी संपत्ति जो तुमने लूटी है, उसे वापस कर दो।"

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस घटना का वर्णन इस प्रकार किया है। वह लिखते हैं कि "आपने हमेशा आदेश दिया है कि शरिया का क्रियान्वयन सतह पर होना चाहिए" अर्थात् शरिया का क्रियान्वयन सतह पर होना चाहिए, दिलों का हाल हम नहीं जानते। "एक बार कुछ साथी युद्ध पर थे। रास्ते में उन्हें एक मुश्रिक मिला जो जंगल में इधर-उधर छिपता रहता था और जब भी कोई अकेला मुसलमान मिलता तो उस पर हमला करके उसे मार डालता था। उसामा बिन जैद ने उसका पीछा किया और एक जगह उसे पकड़ लिया और उसे मारने के लिए तलवार उठाई। जब उसने देखा कि अब मैं फिर से नियंत्रण में आ गया हूँ तो उसने कहा, "अल्लाह के अलावा कोई उपास्य नहीं है।" जिसका मतलब था कि मैं मुसलमान बन जाऊँगा, लेकिन उसामा ने उसकी बातों की परवाह नहीं की और उसे मार डाला। जब एक आदमी इस युद्ध की सूचना अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देने के लिए मदीना पहुँचा तो उसने इस घटना सहित युद्ध का पूरा विवरण सुनाया। इस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसामा को बुलाया और उससे पूछा, "क्या तुमने उस आदमी को मार डाला?" उसने हाँ कहा। उन्होंने (पवित्र पैगंबर) कहा, "क्रयामत के दिन जब ला इलाहा इल्लल्लाह तुम्हारे खिलाफ गवाही देगा तो तुम क्या करोगे?" जैसा कि मैंने पहले कहा।

पाकिस्तान में आज के मौलवी और उनके अनुयायी स्वर्ग जाने की बात करते हैं, कहते हैं कि यदि तुम अहमदियों को मार दोगे तो स्वर्ग जाओगे, लेकिन वे यह नहीं जानते कि उनके कार्यों के कारण उन्हें सर्वशक्तिमान अल्लाह की ओर से दंड का सामना करना पड़ रहा है। देर-सवेर, खुदा उन्हें पकड़ लेगा।

हालाँकि, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इसका वर्णन करते हुए कहते हैं, "यानी, सर्वशक्तिमान खुदा यह सवाल पूछेगा: जब इस व्यक्ति ने ला इलाहा इल्लल्लाह कहा, तो आपने इसे क्यों मार दिया?" यद्यपि वह हत्यारा था, फिर भी उसने पश्चाताप किया था। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कई बार उत्तर दिया, "ऐ अल्लाह के रसूल!" वह भय के कारण विश्वास दिखा रहा था। अल्लाह के रसूल

(सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने कहा, "क्या तुमने उसका दिल फाड़ा और देखा कि वह झूठ बोल रहा था?" और फिर वे बार-बार कहते रहे, "क्रयामत के दिन जब उसका कथन, ला इलाहा इल्लल्लाह, तुम्हारे सामने प्रस्तुत किया जाएगा तो तुम क्या उत्तर दोगे?"

उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, "उस समय मेरे दिल में एक इच्छा पैदा हुई, 'ओह!' मैं आज इस्लाम धर्म अपना लेता और यह कार्य मुझसे नहीं होता।"

(तफ़सीर अल-कुरआन की प्रस्तावना, अनवारुल-उलूम, खंड 20, पृष्ठ 415-416)

तब इनमें से एक कबीला हज़रत बशीर बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु का है, जो यमन और जब्बार की ओर है। यह घटना शव्वाल 7 हिजरी में घटित हुई। बनु गफ़्तान का क्षेत्र ख़ैबर के पास, यमन और जब्बार, फ़दक और वादी अल-कुरा के बीच था। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को खबर मिली कि ग़ाफ़ान का एक समूह पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के खिलाफ़ इकट्ठा हो रहा है और उयैना बिन हिंसन ने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के खिलाफ़ उनका समर्थन करने का वादा किया है।

(शरह अल-जरकानी अली अल-मवाहिब, खंड 3, पृष्ठ 310, दारुल अल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत) (अल-तबकात अल-कुबरा, खंड 3, पृष्ठ 402-403, दारुल अल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत) नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को यह खबर सुनाई, और उन्होंने उन्हें हज़रत बशीर बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजने की सलाह दी।

(इम्ता अल-इस्मा', खंड 1, पृष्ठ 330, दारुल अल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत बशीर बिन साद (रज़ियल्लाहु अन्हु) को बुलाया और उनके लिए एक झंडा तैयार करवाया और उनके साथ तीन सौ साथियों (रज़ियल्लाहु अन्हु) को भेजा। ये साथी सारी रात चलते रहे और सारा दिन छिपे रहे, और अंततः जब्बार के स्थान पर पहुँचे। वहाँ चरवाहे अपने जानवर चरा रहे थे। मुसलमानों को देखकर वे वहाँ से भाग गये और गत्फ़ानी लोगों को सूचना देने चले गये। यह समाचार सुनकर वे लोग अपने पशुधन को छोड़कर अपनी बस्ती के ऊपरी भागों में भाग गये। सब लोग चले गए। उनमें से केवल दो को ही पकड़ा गया और गिरफ़्तार किया गया। साथियों ने भेड़, बकरियों और ऊँटों को अपने कब्जे में ले लिया और कैदियों के साथ मदीना लौट आये। यहाँ, दोनों कैदी मुसलमान बन गए, इसलिए अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उन्हें अपने क्षेत्र में लौटने की अनुमति दे दी।

(अल-सीरत अल-हल्बियाह, खंड 3, पृष्ठ 264, दारुल अल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

(अल-सीरत विश्वकोश, खंड 8, पृष्ठ 514, दारुस्सलाम)

उमरा अल-क्रदा का विवरण इस प्रकार है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जुल-क्रदा 7 हिजरी में उम्राह किया, जो फ़रवरी 629 ईसवी से मेल खाता है।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) 7 हिजरी को जुल-क्रदा में उमरा के लिए निकले।

यह वही महीना था जिसमें मक्का के बुतपरस्तों ने पिछले वर्ष पवित्र पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को उमराह करने से रोक दिया था, और पवित्र पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) हुदैबिया की लड़ाई से वापस आये थे। इसलिए, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अब इस उमराह को पूरा करने के लिए चले गए।

बुखारी के टीकाकार अल्लामा इब्र हज़र ने इसके कई नामों का उल्लेख किया है। ग़ज़वत अल-क्रदा, उमराह अल-क्रदियाह, उमराह अल-सुलह, और उमराह अल-क्रिसास, और इस उमराह को ग़ज़वत अल-अमीन भी कहा जाता है। इसे उमराह अल-क्रिसास इसलिए कहा जाता है क्योंकि मक्का के बहुदेववादियों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को हिजरी कैलेंडर के छठे वर्ष में पवित्र महीने जुल-क्रदा में उमराह करने से रोक दिया था, इसलिए वह पहले उमराह के लिए प्रतिशोधार्थक तीर्थयात्रा पर चले गए और हिजरी कैलेंडर के सातवें वर्ष में जुल-क्रदा के दिन पवित्र मस्जिद में प्रवेश किया। हज़रत इब्र अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि यह आयत उनके बारे में उतरी थी।

الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَتِ قِصَاصٌ

पवित्र महीना पवित्र महीने का प्रतिशोध है, और सभी पवित्र चीजों के उल्लंघन का प्रतिशोध सभी पवित्र चीजों के उल्लंघन का प्रतिशोध है। (अल-बकरा: 195)

इब्र हिशाम ने वर्णित किया है कि मदीना में, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व

सल्लम ने हज़रत उवैफ़ बिन अदबत दिली को अपना डिष्टी नियुक्त किया, और इब्र साद के अनुसार, उन्होंने हज़रत अबू रूहम अल-गिफारी को अपना डिष्टी नियुक्त किया।

उमराह के लिए प्रस्थान विवरण यह वर्णित है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस उमरा के दौरान दो हजार साथियों के साथ थे। प्रस्थान के समय, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा कि हुदैबिया में उपस्थित सभी लोगों को उनके साथ शामिल होना चाहिए। हुदैबिया में उपस्थित सभी साथी इस उमराह में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ थे, सिवाय उन लोगों के जो खैबर की लड़ाई के दौरान शहीद हो गए थे या मारे गए थे। इनके अलावा बहुत से ऐसे साथी भी थे जो हुदैबिया के समय मौजूद नहीं थे। उसके साथ साठ बलि ऊँट थे। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने इन सभी जानवरों के गले में हार पहना दिए और उनकी देखरेख के लिए हज़रत नाजिया बिन जुन्दूब रज़ियल्लाहु अन्हो को नियुक्त किया। जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना से लगभग छह या सात मील दूर, जुल-हुलैफा नामक शहर में पहुंचे, तो उन्होंने एहतियात के तौर पर अपने आगे सौ घुड़सवार भेजे। हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा रज़ियल्लाहु अन्हो को उनका अमीर बनाया गया। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) इस यात्रा पर अपना शरीर, हथियार, कवच और भाले अपने साथ ले गए। उन्होंने हथियार भी भेजे और हज़रत बशीर बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो को उनका पर्यवेक्षक नियुक्त किया।

(सीरत इब्र हिशाम, पृष्ठ 717, दारुल अल् कुतुब अल्-इल्मिया बैरूत), (तबकत अल-कुबरा इब्र साद, खंड 2, पृष्ठ 92, खंड 3, पृष्ठ 403, दारुल अल् कुतुब अल्-इल्मिया बैरूत), (सीरत खतम अल-नबीयिन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत साहिबजादा मिर्जा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो, एमए, पृष्ठ द्वारा 838), (फतह अल-बारी, खंड 7, पृष्ठ 636, आराम बाग, कराची), (अल-सीरत अल-हलाबियाह, खंड 3, पृष्ठ 90, दारुल अल् कुतुब अल्-इल्मिया बैरूत), म् (फरहंग सीरत, पृष्ठ 105, ज़वार अकेडमी)

प्रश्न उठता है: जब समझौता पहले ही हो चुका था तो उमराह पर हथियार ले जाने की क्या जरूरत थी? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूछा गया कि क्या आप अपने साथ हथियार ले गए हैं, जबकि कुरैश ने तलवारों के अलावा अन्य हथियार म्यान में रखने पर रोक लगा दी थी। इस पर पैगंबर (शांति उन पर हो) ने कहा, "हम हथियारों के साथ हरम में प्रवेश नहीं करेंगे, लेकिन हमले के मामले में, वे हमारे पास एक स्थान पर होंगे।" वे उसे मक्का नहीं ले जा रहे हैं। हम उन्हें बाहर रखेंगे क्योंकि वे अविश्वसनीय हैं और किसी भी समय हमला कर सकते हैं। जब मुहम्मद बिन मसलमा घुड़सवारों के साथ मरूद-ज़हरान पहुंचे, तो उनकी मुलाकात कुरैश के कुछ लोगों से हुई जिन्होंने उन्हें बताया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कल उस स्थान पर होंगे, अगर अल्लाह ने चाहा। वे कुरैश के पास आये और उन्हें यह बात बताई तो वे डर गये। जब अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) मर्र अल-ज़हर पहुंचे, तो उन्होंने सभी हथियार यज्ज को भेज दिए, जो मक्का से आठ मील दूर है। जब मक्का के काफ़िरों को यह खबर मिली कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हथियारों और युद्ध की आपूर्ति के साथ मक्का आ रहे हैं, तो वे बहुत घबरा गए और स्थिति की जांच करने के लिए कुछ लोगों को मार-उल-ज़हरान भेजा।

प्रतिनिधि के रूप में गए मिर्कज़ बिन हफ़स ने कहा, "हे सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हमने आपको कभी अपना वादा तोड़ते नहीं देखा।" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा, "हम शांति संधि की शर्तों के अनुसार, बिना हथियारों के मक्का में प्रवेश करेंगे।" यह सुनकर अविश्वासी संतुष्ट हो गये। मिर्कज़ ने कहा, "यही कारण है कि हम आपको अच्छाई और वफादारी का मिश्रण मानते हैं।" वह काफ़िर है और वह यह भी कह रहा है कि हम तुम्हें भलाई और वफादारी के गुणों का मिश्रण मानते हैं। पैगंबर (शांति उन पर हो) ने हज़रत बशीर बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो की कमान के तहत कुछ साथियों को इन हथियारों की रक्षा के लिए नियुक्त किया, और समझौते की शर्तों के अनुसार, तलवार के अलावा कोई हथियार नहीं था। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) अपने साथियों के साथ तल्बिया पढ़ते हुए हरम की ओर बढ़े। बलि के जानवरों को मक्का की एक घाटी धी तुवा में भेजा गया, जो पवित्र मस्जिद से आधा मील दूर है। वह अपने ऊँट कसवा पर सवार था। आपने हज़ुन से मक्का में प्रवेश किया। हज़ुन मुहम्मद घाटी की ओर एक पर्वत है, जो अल्लाह के घर से डेढ़ मील दूर है।

(सीरत हल्बिया, खंड 3, पृष्ठ 90-91, दारुल अल् कुतुब अल्-इल्मिया, बैरूत), (फरहंग सीरत, पृष्ठ 100, 180, ज़ावर अकेडमी)\(दायरा मारीफ सीरत, खंड 8, पृष्ठ 485-487, बज़म-ए-इकबाल, लाहौर)\(मुअजम अल-बुलदान, पृष्ठ 357, अल-फैसल) प्रकाशक, उर्दू बाज़ार, लाहौर) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व

सल्लम ने आखिरी उमरा के मौके पर मक्का में प्रवेश किया और अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हो उनके आगे चल रहे थे और कह रहे थे, "ऐ काफ़िरों की औलाद! नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का रास्ता छोड़ दो। आज नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुक्म से हम तुमको ऐसा पीटेंगे कि तुम्हारी खोपड़ी उखड़ जाएगी और दोस्त अपने दोस्त को भूल जाएगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे कहा, "ऐ इब्र रवाहा, क्या तुम यह कविता अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने और अल्लाह के पवित्र स्थान में पढ़ते हो?" तुम यह ग़लत कह रहे हो। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा, ऐ उमर! छोड़ दो। ये तीरों से ज़्यादा कारगर हैं। (तिर्मिज़ी, अध्याय साहित्य, अध्याय कविता में क्या हुआ, हदीस: 2847) एक परंपरा है।

एक रिवायत में कहा गया है कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हो को कविता पढ़ने से रोका तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा, हे उमर! मैं सुन रहा हूँ कि वह क्या कह रहा है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो इस पर चुप रहे और फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा। आप जो पढ़ रहे हैं वह उच्चेक है। ऐसा मत कहो। आप यह कहते हैं।

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَعَدَّهُ عِبَدًا وَوَأَعَزَّهُ جُنْدًا وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحَدَّ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी पूज्य नहीं है। वह अकेला है। उसने अपने सेवक की सहायता की, उसकी सेना का सम्मान किया और अकेले ही सभी समूहों को पराजित कर दिया।

(शरह ज़रक़ानी, खंड 3, पृष्ठ 320, दारुल अल् कुतुब अल्-इल्मिया, बैरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस घटना का वर्णन अपने शब्दों में किया है: "जब वह मर-उल-ज़हरान पहुंचे, जो मक्का से एक पड़ाव है, तो समझौते के अनुसार, उन्होंने सभी भारी हथियार और कवच वहां जमा कर दिए और स्वयं और उनके साथी रज़ियल्लाहु अन्हो समझौते के अनुसार केवल अपनी म्यान वाली तलवारों के साथ हरम में प्रवेश कर गए।" सात वर्षों के निर्वासन के बाद मुहाजिरीन का मक्का में प्रवेश करना कोई असामान्य बात नहीं थी। एक ओर तो मक्का में उन पर हुए लम्बे अत्याचारों को याद करके उनके हृदय में रक्त बह रहा था, वहीं दूसरी ओर वे इस बात से भी प्रसन्न थे कि खुदा ने उन्हें पुनः काबा की परिक्रमा करने का अवसर प्रदान किया है। मक्का के लोग पहाड़ों की चोटियों पर खड़े होकर मुसलमानों को मक्का छोड़ते हुए देख रहे थे। मुसलमानों के दिल आज यह देखना चाहते थे कि अल्लाह ने उन्हें दोबारा मक्का में प्रवेश करने का अवसर दिया है या नहीं। अतः अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस अवसर पर युद्ध गीत गाना शुरू कर दिया, लेकिन अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उन्हें रोक दिया और कहा: ऐसी कविताएँ न सुनाओ, बल्कि यह कहो कि अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है। यह अल्लाह ही है जिसने अपने रसूल की सहायता की और ईमान वालों को अपमान के गड्ढे से निकाला। "यह केवल खुदा ही है जिसने शत्रुओं को उनके सामने से भगा दिया।"

(तफ़सीर अल्-कुरआन की प्रस्तावना, अनवारुल-उलूम, खंड 20, पृष्ठ 329)

हज़रत इब्र अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो बताते हैं कि: जब अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उमराह किया, तो हम उन्हें मुश्रिकों के युवकों से बचा रहे थे, जिसका अर्थ है कि ये लोग अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की रक्षा कर रहे थे ताकि वे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को कोई नुकसान न पहुँचाएँ।

(बुखारी, अल-मगाज़ी की किताब, उमराह अल-क़ादा का अध्याय, हदीस: 4255)

जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मक्का में प्रवेश किया, तो कुछ कुरैश काफ़िरों ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रति घृणा और दुश्मनी के कारण पहाड़ों पर चले गए, क्योंकि वे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और उनके साथियों को अल्लाह के घर के चारों ओर तवाफ़ करते हुए नहीं देख सकते थे। हालाँकि, कुछ काफ़िर दार-उल-इंदावा में एकत्र हुए। वे वहीं खड़े होकर परिक्रमा देख रहे थे और कह रहे थे, "ये मुसलमान कैसी परिक्रमा करेंगे? वे तो भूख और मदीना के बुखार से कमजोर हो गए हैं।" पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) पवित्र मस्जिद पहुंचे और अपने आप को एक लबादे से ढक लिया, यानी उन्होंने अपने दाहिने कंधे और हाथ को इस तरह से ढक लिया कि उनका दाहिना कंधा और हाथ खुला रहे। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने कहा: अल्लाह उस व्यक्ति पर अपनी दया बरसाए जो इन काफ़िरों के सामने अपनी ताकत का प्रदर्शन करता है।

फिर, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और उनके साथियों ने तवाफ़ के पहले तीन दौर पूरे किए, अपने कंधों को हिलाते हुए और बड़े धैर्य के साथ चलते हुए। इससे पता चला कि आप सोचते हैं कि हम कमज़ोर हैं, लेकिन हम कमज़ोर नहीं हैं।

इस संबंध में बुखारी में एक रिवायत है कि हज़रत इब्र अब्बास ने बताया कि जब अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और उनके साथी पहुंचे, तो मुश्रिकों ने कहा: "आपके पास ऐसे लोग आ रहे हैं जो मदीना के बुखार से कमज़ोर हो गए हैं।" रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने अपने साथियों को तीन चक्कर लगाने का आदेश दिया। अरबी में इसे रमल कहा जाता है। काबा का तवाफ़ करने वाला प्रत्येक व्यक्ति तवाफ़ के पहले तीन दौर में यह रमल करता है। रसूलुल्लाह ने अपने साथियों के प्रति दया के कारण उन्हें सभी दिशाओं में भागने के लिए नहीं कहा।

हज़रत इब्र अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने रिवायत किया। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) काबा, सफा और मरवा के बीच दौड़े और चक्कर लगाया ताकि वह मुश्रिकों को अपनी ताकत दिखा सकें। एक रिवायत के अनुसार, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) सफा और मरवा के बीच अपने घोड़े पर सवार होकर गए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और मुसलमानों ने मरवा के पास कुर्बानी दी। इसके बाद, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने कुछ साथियों को यज्ज में सशस्त्र साथियों के स्थान पर भेजा ताकि वे अपने स्थान पर अपना कर्तव्य निभा सकें और वे भी आकर उमरा और बलिदान कर सकें।

(शरह ज़रकानी, भाग 3, पृष्ठ 322, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बैरुत) (सिरत इब्र हिशाम, पृष्ठ 717, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बैरुत) (हदीस की भाषाएँ, जिल्द 2, पृष्ठ 163) (बुखारी, हज की किताब, अध्याय रेत कैसे शुरू हुई, हदीस: 1602)

(बुखारी, हज की किताब, अध्याय अस-सफा और अल-मरवा के बीच यात्रा में क्या आया, हदीस: 1649)

जो लोग पहले वहां हथियार संबंधी झूठी पर थे, उन्हें वहां आकर उमराह करने के लिए कहा गया तथा कुछ नए लोगों को उनकी झूठी संभालने के लिए वहां भेजा गया।

इस मौके पर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हो से विवाह ऐसा भी हुआ। इसका स्पष्टीकरण यह है कि इस यात्रा के दौरान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मैमूना बिनत हारिस से विवाह किया था। यह विवाह हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो द्वारा तय किया गया था। हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी बहन हज़रत उम्म फदल रज़ियल्लाहु अन्हो को विवाह की अनुमति दी थी, जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चाचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो की पत्नी थीं, और हज़रत उम्म फदल रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो को वह अनुमति दी थी। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनकी शादी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से तय की और हज़रत मैमूना का मेहर चार सौ दिरहम तय किया गया।

(इब्र हिशाम, पृष्ठ 718, दारुल अल् कुतुब अल्-इल्मिया, बैरुत) (इब्र साद द्वारा अल-तबाकत अल-कुबरा, खंड 8, पृष्ठ 217, दारुल अल् कुतुब अल्-इल्मिया, बैरुत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस संबंध में कहा है कि "हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो की भाभी मैमूना, जो बहुत पहले विधवा हो गई थीं, मक्का में थीं।" हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो की इच्छा थी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनसे शादी करें और वह इसके लिए सहमत हो गए।

(तफ़सीर अल-कुरआन की प्रस्तावना, अनवारुल-उलूम, खंड 20, पृष्ठ 329-330)

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) मक्का में तीन दिन तक रहे। जब तीसरा दिन आया तो कुरैश ने हुवैतिब बिन अब्दुल उज़्ज़ा को कुछ कुरैश लोगों के साथ रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास भेजा। एक रिवायत के अनुसार, कुरैश का यह प्रतिनिधिमंडल हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के पास गया और कहा, "आपके ठहरने की अवधि अब समाप्त हो गई है, इसलिए अब चले जाइये।" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा, "यदि हम थोड़ी देर और रुकें तो तुम्हें क्या आपत्ति है?" हम यहीं शादी करेंगे और खाना भी बनाएंगे। मैं शादी करने जा रहा हूँ और मैं तुम्हें भी आमंत्रित करूंगा। कुरैश ने कहा, "हमें आपका निमंत्रण नहीं चाहिए।" फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) अपने साथियों के साथ मक्का से चले गए और अपने गुलाम अबू रफी को हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हो के पास छोड़ दिया। इसलिए, उन्होंने हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हो को लिया और सरीफ मक़ाम में पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुलाकात की, जो तनीम के पास मक्का से लगभग छह से सात मील दूर एक बड़ी घाटी थी।

हज़रत मैमूना का नाम था। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने

उसका नाम बदलकर मैमूना रख दिया। हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से विवाह करने वाली अंतिम महिला थीं। 51 हिजरी में हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हो की मृत्यु उसी स्थान पर हुई जहां उन्होंने पवित्र पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अंतिम विदाई दी थी।

(बुखारी, अल-मगाज़ी की किताब, उमराह अल-क़ादा का अध्याय, हदीस 4251) (अल-असाबा, खंड 8, पृष्ठ 322, 324, दारुल अल् कुतुब अल्-इल्मिया, बैरुत) (इब्र हिशाम, पृष्ठ 718, दारुल अल् कुतुब अल्-इल्मिया, बैरुत) (फरहंग सीरत, पृष्ठ 147, ज़वार अकेडमी)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि "चौथे दिन, मक्का के लोगों ने मांग की कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम समझौते के अनुसार मक्का छोड़ दें, और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तुरंत सभी साथियों को मक्का छोड़ने और मदीना की ओर जाने का आदेश दिया।" मक्का के लोगों की भावनाओं का ख्याल रखते हुए उन्होंने नवविवाहिता मैमूना को पीछे छोड़ दिया ताकि वह बाद में सामान लेकर आ सके और स्वयं अपने घोड़े पर सवार होकर हरम की सीमा से बाहर चले गए। शाम को उनकी पत्नी मैमूना को वहां लाया गया और पहली रात को मैमूना जंगल में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के सामने पेश हुई।

(तफ़सीर अल-कुरआन की प्रस्तावना, अनवारुल-उलूम, खंड 20, पृष्ठ 330)

हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हो को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ संगति का यह पवित्र स्थान बहुत प्रिय था। इसीलिए हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हो ने वसीयत की थी कि जब उनकी मृत्यु हो तो उन्हें उसी स्थान पर दफ़न किया जाए जहाँ नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का तम्बू था। जहाँ मुझे पवित्र रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के समक्ष पेश किया गया। यह खुदायी नियति ही थी कि वह हज के लिए आई और मक्का में बीमार पड़ गईं। कुछ दिनों के बाद उसने कहा, "मुझे मक्का से बाहर ले चलो क्योंकि पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने मुझसे कहा था कि तुम मक्का में नहीं मरोगे।" इसलिए, लोग उसे मक्का से दूर ले गए और अभी उस स्थान पर पहुंचे ही थे कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हो की आत्मा मौलिक पिंजरे से बाहर उड़ गई। उसकी मृत्यु हो गई। इसलिए उनकी वसीयत के अनुसार उन्हें इसी स्थान पर दफनाया गया। उनकी मृत्यु के समय उनकी आयु अस्सी या इक्यासी वर्ष थी।

(इम्ता उल्-अस्मा', खंड 12, पृष्ठ 212, दारुल अल् कुतुब अल्-इल्मिया, बैरुत) (फतह अल-बारी, खंड 9, पृष्ठ 141, आराम बाग, कराची) (मुस्तद्रक अली अल-साहिहीन, खंड 4, पृष्ठ 398, हदीस 6936)

इस यात्रा पर हज़रत हम्ज़ा की बेटी की घटना का ज़िक्र भी उपलब्ध है। हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) मक्का से जाने लगे तो हज़रत हम्ज़ा की बेटी उनके पीछे आई और चिल्लाने लगी, "ऐ मेरे चाचा!" अरे मेरे चाचा! इस पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने इसे ले लिया। उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि वह अपने चाचा की बेटी को ले जाएं। उसने उसे अपनी सवारी पर सवार किया और हज़रत अली, हज़रत ज़ैद और हज़रत जाफ़र ने उसके बारे में बहस की। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा: मैंने उससे शादी की है और वह मेरे चाचा की बेटी है। हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा: वह मेरे चाचा की बेटी है और उसकी चाची मेरी पत्नी हैं। हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा: वह मेरे भाई की बेटी है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी चाची के पक्ष में फैसला सुनाया और कहा : चाची माँ की तरह होती है।

यह भी एक ऐसी समस्या है जो न्यायपालिका में बहुत सारे विवादों का कारण बनती है। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने कहा: "चाची माँ की तरह होती है।" उन्होंने इसे उसे दे दिया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा: "तुम मुझसे हो और मैं तुमसे हूँ।" उन्होंने उन्हें सांत्वना दी और हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा, "आप दिखने और चरित्र में मेरे जैसे हैं," और हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा, "आप हमारे भाई और हमारे आज्ञादा आदमी हैं।" हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा, "क्या तुम हज़रत हम्ज़ा की बेटी से शादी नहीं करोगे?" आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने कहा: वह मेरे पालक भाई की बेटी है। वह इस तरह से शादी नहीं कर सकता। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) जिलहिज्जा के महीने में मदीना लौट आये।

(बुखारी, अल-मगाज़ी की किताब, उमराह अल-क़ादा का अध्याय, हदीस: 4251)

एक सूरिया अखराम बिन अबी अवजा बनु सुलेयम द्वारा है। यह घटना

जिलहिज्जा 7 हिजरी के महीने में घटित हुई। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत अकरम को पचास आदमियों के साथ बनू सुलयम के पास भेजा, जो मदीना के पास रहते थे। हज़रत अख़राम के साथ बनू सुलयम का एक जासूस था, जिसने आगे बढ़कर अपने लोगों को सचेत किया और उन्होंने एक बड़ी सेना एकत्र कर ली। जब हज़रत अख़राम उनके पास पहुंचे तो बनू सुलयम उनसे मुक़ाबला करने के लिए तैयार थे। जब हज़रत अकरम ने उन्हें इस्लाम की ओर आमंत्रित किया तो उन्होंने कहा, "आप हमें जिस ओर बुला रहे हैं, उसकी हमें कोई आवश्यकता नहीं है।" इसके बाद दोनों ओर से तीरंदाजी हुई। इस बीच, बनू सुलयम के लिए और अधिक सैनिक आ गए और उन्होंने मुसलमानों को चारों ओर से घेर लिया। मुसलमानों ने तब तक भयंकर युद्ध लड़ा जब तक कि उनमें से अधिकांश शहीद नहीं हो गए और हज़रत अकरम भी मारे गए लोगों के साथ गंभीर रूप से घायल हो गए। फिर वह 1 सफ़र, 8 हिजरी को अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास पहुंचा।

(अल-तब्कातुल कुब्रा इब्र साद द्वारा, खंड 2, पृष्ठ 94, दारुल अल कुतुब अल-इल्मिया, 1990)

(फरहंग सीरत, पृष्ठ 155, जुवर अकेडमी)

तब एक क्रादिद द्वारा हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्ला लैथी का सुरिया।

इसका उल्लेख किया गया है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह अल-लैथी को सफ़र 8 हिजरी में बनू वलैथ की एक शाखा, बनू मुल्वाह के पास भेजा। बानु मुलावीह कदीद में रहते थे। कादिद मदीना से लगभग दो सौ आठ मील दूर था।

(गज़वत वा सराया, पृष्ठ 413, फ़रीदिया पब्लिशर्स, साहीवाल)

(स्रोत: शरह अल-ज़रक़ानी, खंड 3, पृष्ठ 332, दारुल अल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत); (स्रोत: विश्वकोश सीरत अल-नबी (उन पर शांति हो), पृष्ठ 188, ज़मज़म पब्लिशर्स)

सहीह बुख़ारी में उल्लेख है कि कादिद, उस्फ़ान और कादिद के बीच एक झरना है।

(अल-बुख़ारी किताब अल-सूम, रमज़ान के दिनों के लिए अध्याय इज़ा-साम, फिर सफ़र, हदीस 1944)

एक रिवायत के अनुसार, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु) को पंद्रह लोगों के साथ भेजा था, और इस समूह के मुसलमानों का आदर्श वाक्य "उम्माह उम्माह" था। हज़रत जुनदब बिन मकायथ कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह को एक यात्रा पर भेजा जिसमें मैं भी शामिल था। उन्होंने कादिद में बानु मलवीह पर हमले का आदेश दिया। इसलिए हम निकल पड़े और जब हम कादिद पहुंचे तो हमें इब्र बरसा अल-हरिथ इब्र मलिक अल-लैथी मिले, जिन्हें हमने पकड़ लिया। उसने कहा, "मैं इस्लाम स्वीकार करने के लिए निकला हूँ और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास जा रहा हूँ। हमने कहा कि अगर तुम इस्लाम स्वीकार करने के इरादे से निकले हो तो एक दिन और एक रात की यात्रा तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती, यानी अगर तुम जेल में भी चले गए तो कोई बात नहीं। अगर कोई और इरादा है तो हम उसकी पुष्टि करेंगे, फिर हमने उसे कस कर बाँध दिया और अपने एक अश्वेत साथी को, जिसका नाम सुवेद इब्र मनहर था, उसका संरक्षक नियुक्त कर दिया। हम सूर्यास्त के समय कदीद पहुंचे। हम घाटी के एक तरफ थे। मेरे साथियों ने मुझे जासूस बनाकर भेजा था। मैं एक पहाड़ी पर पहुँचा जहाँ से मैं उन्हें देख सकता था। मैं उस पर चढ़ गया। उसने अपना सिर उठाया और पेट के बल लेट गया। वहाँ एक आदमी अपने तंबू से बाहर आया और मुझे देखा। उसने एक तीर मारा जो मेरी तरफ लगा और एक रिवायत के अनुसार, आप कहते थे कि तीर मेरी आँखों के बीच माथे पर लगा, लेकिन मैं अपनी जगह पर अड़ा रहा। फिर उसने एक और तीर मारा जो मेरे कंधे पर लगा। मैंने उसे भी फेंक दिया, और वह अपनी जगह पर रहा। शक पैदा न हो इसलिए कोई हरकत नहीं की। फिर वह तम्बू में घुस गया और हमने उन्हें कुछ मोहलत दी यहाँ तक कि वे संतुष्ट होकर सो गए। फिर हमने भोर में उन पर हमला किया। उन्होंने अपने योद्धाओं को मार डाला, उनके बच्चों को बंदी बना लिया और उनके जानवरों को भगा दिया। उनमें से एक पुकारनेवाला बाहर आया और हमारी ओर एक सेना ले आया जिसका सामना करने की हमारी शक्ति नहीं थी। उसका एक सेवक गया और एक बड़ी सेना ले आया। वे कहते हैं, "हम जानवरों के साथ चलते रहे, हमने पीछे मुड़कर नहीं देखा और जब हम इब्र बारसा और उसके साथी के पास से गुजरे, तो हमने उन दोनों को अपने साथ ले

लिया।" दुश्मन हमारे पास तब तक आते रहे जब तक कि हमारे और उनके बीच सिर्फ कदीद की घाटी रह गई। अल्लाह तआला ने इस घाटी में बाढ़ भेज दी जबकि हम कोई बादल या बारिश नहीं देख पाए। तो अल्लाह तआला ने कुछ ऐसा भेजा जिसका कोई विरोध नहीं कर सकता था और कोई भी उस पर विजय नहीं पा सकता था। दुश्मन वहीं खड़े हमें देख रहे थे और हम उनके जानवरों को भगा रहे थे। उनमें से कोई भी हमारी ओर नहीं आ पाया और हम जानवरों को तेज़ी से भगाते रहे जब तक कि हम उन्हें पीछे नहीं छोड़ गए। तब वह यानी दुश्मन पीछे रह गया। तब वे हमें पकड़ न सका और हम अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास आये।

(शरह ज़रक़ानी, खंड 3, पृष्ठ 332, 333, दारुल किताब अल-इल्मिया, बैरुत)

(सब्बुल अल-हुदा और अल-रशीद, खंड 6, पृष्ठ 137, दारुल किताब अल-इल्मिया, 1993)

हालाँकि, ये घटनाएँ अभी भी हो रही हैं। इस समय मैं पाकिस्तान के अहमदिया लोगों के लिए भी विशेष दुआ करना चाहूँगा। पाकिस्तानी अहमदिया लोगों को भी अपने लिए दुआ करनी चाहिए। और जैसा कि मैंने कहा, दुरूद पर ध्यान दो और इसे दो सौ बार पढ़ो।

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

इस समय आपको इस पर जितना हो सके उतना ध्यान देना चाहिए।

यदि हम दुआ करने के अपने अधिकार को पूरा करते हुए दुआ पर ध्यान देंगे, तभी सफलता मिलेगी।

जो ध्यान दिया जाना चाहिए था, वह नहीं दिया जा रहा है। मैं बस इतना ही कह रहा हूँ, और जैसा कि कुछ लोगों ने मुझे लिखा है, केवल दुआ से कुछ नहीं होगा, कुछ और करना होगा। और क्या किया जाना चाहिए?

हमारा एकमात्र हथियार दुआ है। मैंने यह कई बार समझाया है। मैं पहले ही मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम (उन पर शांति हो) के उद्घरणों का उल्लेख कर चुका हूँ। यह बहुत गलत विचार है कि दुआ से कुछ नहीं होता। फिर भी दुआ हमारी सफलता की कुंजी है।

अल्लाह तआला सभी को सफलता प्रदान करें और हम नमाज़ का हक पूरा करने वाले बनें।

अगर हम बस इतना कहें कि दुआएँ बेकार हैं और वे पूरी नहीं हो रही हैं, तो यह एक झूठा आरोप होगा जो हम सर्वशक्तिमान अल्लाह के खिलाफ लगाएंगे। इसलिए हमें भी क्षमा मांगनी चाहिए।

आज कराची में भी एक घटना घटी है। इस्लाम के नाम पर काम करने वाले दंगाई, आतंकवादी, आतंकवादी हैं, उन्होंने हमारी मस्जिद पर हमला किया है और एक अहमदिया को शहीद भी कर दिया है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। इसका ब्यौरा अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। जब विवरण आएगा, तो स्पष्टीकरण भी दिया जाएगा, खुदा की इच्छा होगी।

अल्लाह तआला इन अत्याचारियों को जल्द ही न्याय के कठघरे में लाये।

★ ★ ★
130 वां जलसा सालाना क्रादियान

26, 27, और 28 दिसम्बर 2025 ई. के आयोजित होगा सय्यदना हज़रत हज़रत खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क्रादियान के लिए 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंजूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ कर दें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएँ और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाएँ। इस जलसे के हर प्रकार से सफल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन। (नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क्रादियान)

ख़ुत्ब: जुमअ:

नबी अकर्म सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ज़वा-ए-मौअता के लिए सेना रवाना करते समय यह नसीहत फ़रमाई: मैं तुम्हें अल्लाह तआला का तक्वा अपनाने और अपने साथियों, यानी मुसलमानों के साथ भलाई का हुक्म देता हूँ। अल्लाह के नाम के साथ, अल्लाह के इंकारी लोगों से मुक़ाबला करो। न धोखा देना, न ख़्यानत करना, न किसी दूध पीते बच्चे को क़त्ल करना, न किसी औरत को और न ही किसी बूढ़े व्यक्ति को क़त्ल करना। न किसी खजूर के पेड़ को काटना, न किसी अन्य वृक्ष को काटना, बल्कि किसी भी पेड़ को न काटना और न ही किसी इमारत को ढहाना। सन् 7 और 8 हिजरी के कुछ ग़ज़वात और सराया के संदर्भ में हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुबारक सीरत का वर्णन।

श्रीमान लईक अहमद चीमा साहिब शहीद कराची, श्रीमाना साहिबज़ादी अमतुल-मुसव्वर नूरी साहिबा, जो श्रीमान डॉक्टर मसऊद-उल-हसन नूरी साहिब रब्बा की पत्नी थीं, और श्रीमान हसन सानोगो अबू बक्र साहिब, जो बुर्कीना फ़ासो के लोकल मुबल्लिग़ थे इनकी विशेषताओं का वर्णन और नमाज़े जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्जा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनसिहिल अज़ीज़, दिनांक 25 अप्रैल 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ. بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ. الْحَمْدُ لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ. الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ. مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ.
إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ. صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّالِّينَ

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय के विभिन्न अभियानों का उल्लेख किया जा रहा है। इस संबंध में एक सरिया हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह अल-लैथी की फदक की ओर यात्रा का भी उल्लेख है। हज़रत बशीर बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु शोबान 7 हिजरी में तीस लोगों के साथ बनू मुरा की ओर फदक गए। बनू मुरा ने हज़रत बशीर बिन साद के सभी साथियों को शहीद कर दिया।

(सब्लुल हुदा वल् रिशाद, खंड 6, पृष्ठ 132, दारुल अल् कुतुब अल्-इल्मिया, बैरुत)

इसका उल्लेख पहले भी किया जा चुका है। जब अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को हज़रत बशीर बिन साद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की शहादत की खबर मिली तो उन्होंने हज़रत जुबैर बिन अब्वाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) को तैयार किया और कहा, "जाओ!" जब तक तुम उस स्थान पर न पहुंच जाओ जहां हज़रत बशीर बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथी शहीद हुए थे, और यदि अल्लाह तुम्हें विजय प्रदान करे तो उनमें से किसी को भी पीछे न छोड़ना। हमें उन दुश्मनों को नहीं छोड़ना चाहिए जिन्होंने मुसलमानों पर अत्याचार किया, उन्हें मारा और शहीद किया। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने साथ दो सौ साथियों को तैयार किया और उनके लिए एक झंडा स्थापित किया।

(सब्लुल हुदा वल् रिशाद, खंड 6, पृष्ठ 140, दारुल किताब अल्-इल्मिया, बैरुत)

जब हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु कादिर की लड़ाई से विजयी होकर लौटे, तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु को बैठने के लिए कहा (यानी, नहीं जाने के लिए) और हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु को इन दो सौ साथियों के साथ भेज दिया। इसलिए जब हज़रत ग़ालिब रज़ियल्लाहु अन्हु दुश्मन के पास पहुंचे तो उन्होंने जासूस भेजे। अर्थात् हज़रत ग़ालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने जासूस भेजे। उन्होंने हज़रत अलबाह बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को दस आदमियों के साथ दुश्मन के खेमे की ओर भेजा। उन्होंने एक समूह को देखा और हज़रत ग़ालिब के पास लौटकर पूरी स्थिति बताई। हज़रत ग़ालिब आगे बढ़े और दुश्मनों के इतने करीब आ गए कि वे उन्हें देख सकते थे। दुश्मन शांति से सो गया था। हज़रत ग़ालिब ने अल्लाह की प्रशंसा की और फिर अपने साथियों को संबोधित करते हुए कहा, "मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम अल्लाह के प्रति, जो एकमात्र है, बिना किसी साझीदार के, तक्वा करो।" उसने अपने

साथियों से कहा, "मैं तुम्हें अल्लाह से डरने की सलाह देता हूँ, जो एकमात्र है, और यह कि तुम मेरी आज्ञा का पालन करो और मेरी अवज्ञा न करो और मेरे किसी आदेश का विरोध न करो, क्योंकि जो व्यक्ति आज्ञा का पालन नहीं करता, उसका कोई मत नहीं है।" एक रिवायत में ये शब्द इस प्रकार हैं: "मेरी अवज्ञा न करो, क्योंकि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: "जिसने मेरे सरदार की आज्ञा मानी, उसने मेरी आज्ञा मानी और जिसने उसकी अवज्ञा की, उसने मेरी अवज्ञा की।" इसलिए यदि तुम मेरी अवज्ञा करोगे, तो अपने नबी की अवज्ञा करोगे। फिर उन्होंने उनके बीच भाईचारा स्थापित किया और कहा, "हे अमुक!" तुम अमुक व्यक्ति के साथ हो और अरे अमुक! तुम अमुक व्यक्ति के साथ हो। तुममें से कोई अपने भाई से अलग न हो और तुममें से कोई मेरे पास न आए और मैं उससे पूछूँ, "तुम्हारा साथी कहां है?" और वह कहे, "मुझे नहीं मालूम।" फिर उसने कहा, "जब मैं तकबीर कहूँ, तो मेरे साथ तकबीर कहो।" जब युद्ध शुरू हुआ और मुसलमानों ने दुश्मन को घेर लिया, तो हज़रत ग़ालिब ने तकबीर कही। दूसरे साथियों ने भी तकबीर कही और अपनी तलवारें म्यान में रख लीं। दुश्मन भी युद्ध के लिए तैयार होकर निकल पड़े। कुछ समय तक युद्ध चलता रहा और मुसलमानों ने उन्हें अपनी मर्जी से मारा। उस दिन मुसलमानों का नारा था "अमित अमित"। मुसलमान लूट के रूप में बहुत से ऊँट और बकरियाँ लेकर आए। प्रत्येक व्यक्ति का हिस्सा दस ऊँट था, या एक ऊँट के बदले दस बकरियाँ।

(अल-सीरत अल्-हलाबिया, खंड 3, पृष्ठ 266, दारुल किताब अल्-इल्मिया, बैरुत)

यह एक सरिया है। सियारिया हज़रत शुजा बिन वहाब जो सिय्या की ओर हुआ। यह अभियान हज़रत शुजा बिन वहाब के नेतृत्व में 8 हिजरी रबीउल अव्वल में सिय्या की ओर हुआ। सिय्या मक्का और बसरा के बीच एक स्थान था, जो मदीना से पांच रात की यात्रा पर था।

(सब्लुल हुदा वल् रिशाद, खंड 6, पृष्ठ 142, दारुल किताब अल्-इल्मिया, बैरुत) (शरह ज़रकानी की सांसारिक उपहारों पर टिप्पणी, खंड 3, पृष्ठ 337, दारुल किताब अल्-इल्मिया, बैरुत)

हज़रत शुजा के पिता का नाम वहाब बिन रबीआ था। हज़रत शुजा को उन महान साथियों में गिना जाता है जिन्होंने जल्दी ही इस्लाम स्वीकार कर लिया था। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के मिशन के छह वर्ष बाद, मुहाजेरीन (प्रवासी) रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के आदेश पर अबीसीनिया की ओर जाने वाले दूसरे कारवां में शामिल हो गए। कुछ समय बाद यह अफवाह सुनकर कि मक्का के लोग मुसलमान बन गये हैं, हज़रत शुजा अबीसीनिया से मक्का लौट आये। जब पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने अपने साथियों को मदीना की ओर पलायन करने की अनुमति दी, तो वे अपने भाई उकबाह बिन वहाब के साथ मक्का छोड़कर मदीना चले गए। हज़रत शुजा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बद्र, उहुद और खंडक सहित सभी लड़ाइयों में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ भाग लिया

और चालीस वर्ष से कुछ अधिक की आयु में यमामा की लड़ाई में शहीद हो गए।

(सांसारिक उपहारों पर शरह अल-जरकानी की टिप्पणी, खंड 5, पृष्ठ 21, दारुल किताब अल्-इल्मिया, बैरूत)
(ओसोदुल् गाबा, खंड 2, पृष्ठ 611, खंड 4, पृष्ठ 59, दारुल किताब अल्-इल्मिया, बैरूत)

हालाँकि, इस सिलसिले का विवरण इस तरह से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को लगातार सूचना मिल रही थी कि सिय क्षेत्र के बन् हवाज़िन इस्लाम के दुश्मनों की मदद कर रहे हैं और मुसलमानों से संबद्ध जनजातियों के सदस्यों को लूट रहे हैं और जंगलों में छिपे हुए हैं।

रबी अल-अव्वल के महीने में, 8 हिजरी को, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत शुजा रज़ियल्लाहु अन्हु को चौबीस मुजाहेदीन के साथ बन् हवाज़िन को दबाने के लिए नियुक्त किया। उन्हें बानू अमीर भी कहा जाता था। हज़रत शुजा रात में मुजाहेदीन के साथ यात्रा करते थे और दिन में छिपे रहते थे, जब तक कि सुबह अचानक वे बन् अमीर के सिर पर नहीं पहुंच गए और उन पर हमला नहीं कर दिया। हज़रत शुजा ने अपने मुजाहेदीन को आदेश दिया कि वे उनका पीछा न करें। उन्हें बहुत से ऊँट और बकरियाँ मिलीं, जिन्हें वे मदीना ले गए और लूट का माल आपस में बाँट लिया। उनमें से प्रत्येक को अपने हिस्से के रूप में पंद्रह ऊँट मिले। इस सिलसिले में पंद्रह दिन व्यतीत हुए।

(गज़ावत और सराया, मुहम्मद अज़हर फ़रीद शाह, पृष्ठ 415, फ़रीदिया पब्लिशर्स, साहीवाल) (अल-सीरत अल-हलाबिया, खंड 3, पृष्ठ 267, दारुल किताब अल्-इल्मिया, बैरूत)

फिर एक उल्लेख हज़रत काब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु का वंश अवतरित होने वाले की ओर यह पाया जाता है। यह घटना 8 रबी अल-अव्वल, 8 हिजरी को घटित हुई।

(सब्लुल हुदा वल् रिशाद, खंड 06, पृष्ठ 143, दारुल किताब अल्-इल्मिया, बैरूत)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत काब बिन उमर अल-गफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु को सूचना भेजी, जो सीरिया की भूमि में वादी अल-कुरा के पीछे स्थित था और मुताह के आसपास था, जो मदीना से लगभग छह सौ मील दूर था।

हज़रत काब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ पंद्रह साथी थे। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को सूचना मिली थी कि बन् कुदाज़ाह ने वादी अल-कुरा से आगे, धात-ए-अतला में मुसलमानों पर हमला करने के लिए एक बड़ी सेना संगठित करने की तैयारी शुरू कर दी है।

(गज़ावत मुताह, सराया, और बाऊथ ब्रैक बिन मुहम्मद द्वारा, पृष्ठ 219)

(गज़ावत मुताह कृत बशमिल, पृष्ठ 325, नफ़ीस अकेडमी कराची)(गज़ावत वासरया कृत मुहम्मद अज़हर फ़रीद शाह, पृष्ठ 416, फ़रीदिया पब्लिशर्स साहीवाल)

धात-ए-अतलाह पहुंचने पर हज़रत काब को एक बड़ी दुश्मन सेना मिली। इसका कारण यह था कि जब हज़रत काब चल पड़े और ज़ात-ए-इतला के पास पहुंचे तो एक दुश्मन जासूस ने उन्हें देख लिया और तुरंत अपने आदमियों को मुसलमानों के आगे बढ़ने की सूचना दे दी।

उन्होंने एक बड़ी सेना तैयार की और उसे इकट्ठा किया। साथियों ने इन लोगों को इस्लाम की दावत दी, लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया और साथियों पर तीर चलाने लगे। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथियों ने यह कार्रवाई देखी तो उन्होंने उससे जमकर युद्ध किया, जब तक कि वे सभी युद्ध में शहीद नहीं हो गये।

उनका एक साथी भी मारा गया और घायल हो गया, लेकिन वह बच निकला। एक परंपरा के अनुसार, वह स्वयं हज़रत काब बिन उमैर थे।

(अल-सीरत अल-हलाबिया, खंड 3, पृष्ठ 267, दारुल किताब अल्-इल्मिया, बैरूत)(मुहम्मद अज़हर फ़रीद शाह द्वारा गज़ावत और सराया, पृष्ठ 416, फ़रीदियाह पब्लिशर्स, साहीवाल)(सब्लुल हुदा वल् रिशाद, खंड 6, पृष्ठ 143, दारुल किताब अल्-इल्मिया, बैरूत, लेबनान, 1993)

हालाँकि, यह लिखा है कि जब रात ठंडी हो गई, तो वे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास गए और उन्हें घटना की जानकारी दी। यह खबर आपके लिए बहुत कठिन थी।

(अल-मगाज़ी, अल-वाकिदी की किताब, खंड 2, पृष्ठ 202, दारुल अल् कुतुब अल्-इल्मिया, बैरूत)

नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने तुरन्त उनकी ओर एक सेना भेजने का इरादा किया, लेकिन तभी आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को पता चला कि वे उस स्थान से हटकर कहीं और चले गए हैं, इसलिए आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने यह इरादा स्थगित कर दिया।

(अल-सीरत अल-हलाबिया, खंड 3, पृष्ठ 267, दारुल किताब अल्-इल्मिया, बैरूत)

मृतकों का आक्रमण यह जमादिउल-अव्वल, 8 हिजरी, या सितंबर 629 ई. में हुआ था। मुताह सीरिया की सीमा के भीतर बल्का की भूमि पर स्थित एक बस्ती है, जो मदीना से लगभग छह सौ मील दूर है। इसे सरदारों की सेना का युद्ध भी कहा जाता है, क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस सेना के रवाना होने से पहले इसके लिए एक से अधिक सेनापति नियुक्त किये थे।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत मिर्जा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए. पेज 740 द्वारा) (सब्लुल हुदा वल् रिशाद वॉल्यूम 6 पेज 144 दारुल अल् कुतुब अल्-इल्मिया बैरूत) (गजवा उहुद अल्लामा बशमिल पेज 325 नफ़ीस अकेडमी कराची)(हसन बिन मुहम्मद अल्-मशात द्वारा अल्-वारी पृष्ठ 558 प्रकाशन और वितरण के लिए दार अल-मिन्हाज)

इस आक्रमण के कारण इसमें लिखा है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत हारिस बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु को अपना पत्न लेकर बसरा के शासक के पास द्रुत बनाकर भेजा। जब वह मुताह के स्थान पर पहुंचा तो शरहबील बिन अम्र ग़ास्सानी उसके पास आये और पूछा, "तुम कहां जा रहे हो?" उसने कहा कि वह सीरिया जा रहा है। शरहबील ने पूछा, "क्या मुहम्मद अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) नहीं हैं?" आप ने कहा, "हाँ, वह अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) हैं।" जब शरहबील ने आदेश दिया, तो उन्हें बांध दिया गया। उसने अपने साथियों से कहा कि उन्हें बांध दो। फिर शरहबील ने उसे शहीद कर दिया। जब अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने इसके बारे में सुना, तो वह बहुत दुखी हुए। पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने साथियों को बुलाया और उन्हें हज़रत हारिस बिन उमैर (रज़ियल्लाहु अन्हु) और उन्हें शहीद करने वालों की शहादत के बारे में बताया। इस कारण से, मोअता पर आक्रमण हुआ।

(अल-तबक़त अल-कुबरा, इब्न साद द्वारा, खंड 4, पृष्ठ 255, दारुल अल् कुतुब अल्-इल्मिया, बैरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस युद्ध के कारणों और पृष्ठभूमि का वर्णन करते हुए लिखते हैं, "जब आप काबा की तीर्थयात्रा से लौटे तो आपको सूचना मिलने लगी कि सीरिया की सीमा पर ईसाई अरब कबीले यहुदियों और काफ़िरों के उकसावे पर मदीना पर हमला करने की तैयारी कर रहे हैं।" इसलिए, पैगंबर (शांति उन पर हो) ने इन अफवाहों की सच्चाई की जांच करने के लिए पंद्रह लोगों का एक दल सीरियाई सीमा पर भेजा। जब ये लोग सीरियाई सीमा पर पहुंचे तो उन्होंने वहां सेना इकट्ठी होते देखी। इसके बजाय कि ये लोग वापस लौटकर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सूचित करें। उपदेश देने का उत्साह, जो उस युग में एक आस्तिक का सच्चा लक्षण था, उन पर हावी हो गया, और वे साहसपूर्वक आगे बढ़े और इन लोगों को इस्लाम की ओर आमंत्रित करना शुरू कर दिया। "जो लोग अपने दुश्मनों के उकसावे में आकर रसूलुल्लाह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मातृभूमि पर आक्रमण कर उसे जीतना चाहते थे, वे इन लोगों की एकेश्वरवाद की शिक्षाओं से प्रभावित नहीं हो सकते थे।" उनसे प्रचार पर कोई प्रभाव डालने की अपेक्षा नहीं की गई थी। "जैसे ही इन लोगों ने उन्हें इस्लाम की शिक्षा देनी शुरू की, चारों ओर से (शत्रुओं की ओर से) सैनिकों ने अपने धनुष उठा लिये और उन पर बाणों की वर्षा करने लगे।" जब मुसलमानों ने देखा कि हमारे उपदेश के जवाब में तर्क और प्रमाण प्रस्तुत करने के बजाय ये लोग तीर चला रहे हैं, तो वे भागे नहीं और सैकड़ों-हजारों की इस भीड़ से अपनी जान नहीं बचाई। बल्कि, सच्चे मुसलमानों के रूप में, वे पंद्रह लोग इन सैकड़ों और हजारों लोगों के खिलाफ दृढ़ता से खड़े रहे और वे सभी वहीं मर गए और ढेर हो गए।

आज ये तथाकथित मुसलमान अहमदिया लोगों के साथ भी वैसा ही व्यवहार कर रहे हैं।

"अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) उन लोगों को दंडित करने के लिए एक और सेना भेजना चाहते थे जिन्होंने ऐसा क्रूर कार्य किया था।" इसी बीच आपको सूचना मिली कि जो सेना वहां एकत्र हो रही थी, वह बिखर गई है, "वह इधर-उधर बिखर गई है," और आपने इस इरादे को कुछ देर के लिए स्थगित कर दिया।

इस समय के दौरान, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने

रास्सान जनजाति के प्रमुख को, जो रोमन सरकार की ओर से बसरा का गवर्नर था, या स्वयं रोमन सीज़र को एक पत्र लिखा। पत्र में संभवतः उपर्युक्त घटना के बारे में शिकायत होगी कि कुछ सीरियाई जनजातियाँ इस्लामी क्षेत्र पर हमला करने की तैयारी कर रही हैं और उन्होंने बिना किसी कारण के पंद्रह मुसलमानों की हत्या कर दी है। यह पत्र अल-हरिथ नामक एक साथी को भेजा गया था। सीरिया जाते समय वे मुताह नामक स्थान पर रुके, जहाँ उनकी मुलाकात घासन जनजाति के एक सरदार से हुई जिसका नाम सरजील (आपने सरजील लिखा है) था, जो सीज़र द्वारा नियुक्त अधिकारियों में से एक था। मैं सोचता हूँ कि यह एक गलती है। "असली नाम शरहाबील है।" उसने उनसे पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो?" शायद आप अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) हैं? उन्होंने कहा हाँ। इसके बाद उसने उन्हें गिरफ्तार कर लिया, रस्सियों से बांध दिया और पीट-पीटकर मार डाला। यद्यपि इतिहास में इसका स्पष्टीकरण नहीं मिलता, परन्तु इस घटना से यह संकेत मिलता है कि यह व्यक्ति उस सेना के नेताओं में से एक रहा होगा जिसने प्रथम पंद्रह साथियों को मार डाला था। "यह शरहाबील जो है।" इसलिए, उसका यह प्रश्न कि शायद आप अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के दूतों में से एक हैं, यह दर्शाता है कि उसे डर था कि मुहम्मद, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) कैसर से शिकायत करेंगे कि आपके क्षेत्र के लोग हमारे क्षेत्र के लोगों पर हमला कर रहे हैं, और उसे डर था कि राजा इस वजह से हमसे सवाल न करे। इसलिए उसने संदेशवाहक को मार डालना ही बेहतर समझा, ताकि संदेश उस तक न पहुँचे और कोई जांच भी न हो। लेकिन अल्लाह तआला ने उसकी नापाक साजिशों को कामयाब नहीं होने दिया और हारिस की हत्या की खबर किसी तरह अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) तक पहुँच गई और उन्होंने तीन हजार की एक फौज तैयार करके जैद बिन हारिस (जो एक गुलाम था जिसे उसने आजाद करवाया था...) की कमान में सीरिया भेज दिया ताकि उसे इस पहली घटना और इस घटना की सजा दी जा सके।

(तफ़सीर अल्-कुरआन की प्रस्तावना, अनवारुल-उलूम, खंड 20, पृष्ठ 331-333)

इस अवसर पर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने सेना प्रमुखों की नियुक्ति का उल्लेख किया।

इस प्रकार, यह पाया जाता है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत जैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु को तीन हजार आदमियों की एक सेना का कमांडर नियुक्त किया और कहा कि यदि हज़रत जैद रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए, तो हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु कमांडर होंगे, और यदि हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए, तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु कमांडर होंगे, और यदि वह भी शहीद हो गए, तो मुसलमान जिसे चाहें अपना कमांडर नियुक्त कर सकते हैं।

नुमान नामक एक यहूदी वहाँ उपस्थित था और उसने कहा, "ऐ अबू अल-कासिम! (यहूदी पैगंबर (शांति उस पर हो) को इसी नाम से पुकारते थे।) यदि आप एक पैगंबर हैं, तो आपने जिन जिन्नो का नाम लिया है, वे सभी शहीद होंगे, चाहे वे कम हों या अधिक। फिर उसने कहना शुरू किया कि जब इसराइल के बच्चों के नबियों ने एक व्यक्ति को राष्ट्र का नेता नियुक्त किया और फिर कहा कि यदि अमुक व्यक्ति मारा गया, तो अमुक व्यक्ति नेता बन जाएगा। यदि उन्होंने सौ पुरुषों का भी नाम लिया होता, तो वे सभी मारे गए होते। फिर उसी यहूदी ने हज़रत जैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से कहा: "जैद! इच्छा करें। यदि मुहम्मद सच्चे रसूलुल्लाह हैं तो आप वापस नहीं आ सकेंगे। हज़रत जैद ने जवाब दिया, "मैं गवाही देता हूँ कि आप एक सच्चे और शुद्ध रसूल हैं।"

जब पवित्र पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) प्रमुखों की नियुक्ति कर रहे थे, तो यह घटना तब घटी जब हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, "हे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)!" मेरे माता-पिता आप पर कुर्बान हों गए हैं। मैंने यह नहीं सोचा था कि आप हज़रत जैद को मेरा शासक बना देंगे। मेरा परिवार ऊंचे पदों पर है, उन्होंने मुझे नियुक्त नहीं किया। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने कहा, "तुम जाओ।" तुम्हें नहीं मालूम कि क्या बेहतर है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत जैद को एक सफेद झंडा दिया और उन्हें हज़रत हारिस बिन उमैर की शहादत के स्थान पर पहुँचने और लोगों को इस्लाम की ओर आमंत्रित करने की सलाह दी। अगर वे स्वीकार करते हैं, तो ठीक है; अन्यथा, उनके खिलाफ सर्वशक्तिमान अल्लाह से मदद मांगो और उनसे लड़ो।

(मार्गदर्शन और मार्गदर्शन के पथ, खंड 6, पृष्ठ 145, दारुल किताब अल्-इल्मिया, बैरुत)(सांसारिक उपहारों पर शरह अल-जरकानी की टिप्पणी, खंड 3,

पृष्ठ 340-342, दारुल किताब अल्-इल्मिया, बैरुत)(साहिह बुखारी, अल-मगाजी की पुस्तक, मुताह की लड़ाई का अध्याय, द्वारा वर्णित) 4261)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने इन लोगों को विदा किया और उन्हें एक वसीयत भी दी।

इसका विवरण इस प्रकार है: लोग तैयार होकर चल पड़े और सेना मदीना से तीन मील दूर जुर्फ में एकत्रित हुई। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) भी उन्हें विदाई देने के लिए विदाई मंच पर आये।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने युद्ध के लिए निकलने से पहले इस्लामी सेना को निर्देश देते हुए कहा:

मैं तुम्हें अल्लाह से डरने और अपने आस-पास के मुसलमानों के साथ अच्छा व्यवहार करने की सलाह देता हूँ। अल्लाह के नाम पर अल्लाह के अविश्वासियों से लड़ो। धोखा मत दो, विश्वासघात मत करो, शिशु को मत मारो, स्त्री को मत मारो, या वृद्ध व्यक्ति को मत मारो। न तो किसी ताड़ के पेड़ को काटना है, न ही किसी पेड़ को काटना है, बल्कि किसी भी पेड़ को नहीं काटना है और न ही किसी इमारत को ध्वस्त करना है।

(शार्ह अल-जरकानी की सांसारिक उपहारों पर टिप्पणी, खंड 3, पृष्ठ 342, दारुल अल् कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

उन्होंने सेना के कमांडरों से, जो जनरल थे, यह भी कहा कि जब तुम किसी बहुदेववादी से मिलो तो उसे तीन चीजों में से एक के लिए आमंत्रित करो। वे जो भी कहें उसे स्वीकार करें और उन्हें ठेस न पहुँचाएँ। उन्हें अपने शहर से शरणार्थियों के शहर में जाने के लिए आमंत्रित करना। यदि वे ऐसा करते हैं, तो उन्हें बताइए कि जो उनके लिए है, वही शरणार्थियों के लिए है, और जो उन पर है, वही शरणार्थियों पर है। यदि वे मना करें तो उनसे कहो कि वे रेगिस्तान के मुसलमानों के पास चले जाएँ, जो गांव के निवासी हैं। उनके लिए अल्लाह का फ़ैसला बाकी मुसलमानों के समान ही होगा, लेकिन उन्हें लूट या धन में से कुछ भी तब तक नहीं मिलेगा जब तक वे मुसलमानों के साथ मिलकर युद्ध न करें। यदि वे इससे भी इन्कार करें तो उनसे जज़िया (कर) की मांग करें। यदि वे सहमत हों तो उनकी बात मान लें और उन्हें प्रताड़ित करना बंद कर दें। यदि वे इससे भी इन्कार करें तो उनके विरुद्ध अल्लाह से सहायता मांगो और उनके विरुद्ध जिहाद छेड़ दो। यदि तुम किसी किले या शहर को घेर लो और वे तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल के लिए उत्तरदायी बनाना चाहें, तो उन्हें अल्लाह और उसके रसूल के लिए उत्तरदायी न बनाओ, अर्थात् उनके माध्यम से संधि न करो, बल्कि अपने आप को और अपने पूर्वजों को उत्तरदायी बनाओ। यदि तुम अपना और अपने पूर्वजों का वचन तोड़ दोगे तो यह अल्लाह और उसके रसूल का वचन तोड़ने से अधिक नरमी होगी।

(सब्लुल हुदा वल् रिशाद, खंड 6, पृष्ठ 146, दारुल अल् कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसे विस्तार से इस प्रकार वर्णित किया है: नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने "आदेश दिया कि जैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु सेना के कमांडर होंगे, और यदि वह मारे गए, तो जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु कमांडर होंगे, और यदि वह मारे गए, तो अब्दुल्ला बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु कमांडर होंगे, और यदि वह भी मारे गए, तो मुसलमानों को अपने में से किसी एक को अपना अधिकारी चुनना चाहिए।" उस समय एक यहूदी तुम्हारी सभा में बैठा था। उसने कहा, "ऐ अबू अल-कासिम! अगर तुम सच्चे हो, तो ये तीनों आदमी ज़रूर मारे जाएँगे, क्योंकि अल्लाह तआला अपने नबियों के मुँह से निकले हुए शब्दों को पूरा करता है।" फिर उसने जैद को संबोधित किया और कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूँ, अगर मुहम्मद, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम), खुदा के सच्चे रसूलुल्लाह हैं, तो तुम कभी जीवित नहीं लौटोगे।"

जैद ने उत्तर दिया, "मैं वापस आऊँ या न आऊँ, अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ही खुदा के सच्चे रसूलुल्लाह हैं।"

अगली सुबह सेना रवाना हुई और पवित्र रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और उनके साथी उसे विदा करने गए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवनकाल में किसी भी मुस्लिम जनरल ने उनकी आज्ञा के बिना किसी महत्वपूर्ण मिशन पर इतनी बड़ी सेना का नेतृत्व नहीं किया था।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस सेना के साथ चलते थे और उन्हें सलाह देते थे। अंततः मदीना से बाहर उस स्थान पर पहुँचकर, जहाँ से वह मदीना में दाखिल हुआ था और जहाँ मदीना के लोग आमतौर पर अपने यात्रियों के लिए शरण

रखते थे, वह खड़ा हुआ और कहा: "मैं तुम्हें अल्लाह से डरने की सलाह देता हूँ।" वहां खड़े होकर उन्होंने सेना को सलाह दी:

"मैं तुम्हें अल्लाह से डरने और अपने बीच के सभी मुसलमानों के साथ दयालुता से पेश आने की सलाह देता हूँ।" "अल्लाह के नाम पर युद्ध में जाओ और सीरिया में अपने और खुदा के दुश्मनों के खिलाफ लड़ो।" जाओ और सीरिया में अपने और खुदा के दुश्मनों से लड़ो। जब आप सीरिया पहुंचेंगे तो आप पाएंगे कि लोग अपने पूजा स्थलों पर बैठे हुए खुदा का नाम स्मरण कर रहे हैं। उन्हें नुकसान न पहुंचाएँ, उन्हें परेशान न करें, उन्हें नुकसान न पहुंचाएँ, और दुश्मन की भूमि में किसी महिला, बच्चे, अंधे आदमी या बूढ़े को न मारें। किसी भी पेड़ के तने या इमारत को ध्वस्त नहीं किया जाएगा। यह सलाह देने के बाद, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) वहां से लौट आये और इस्लामी सेना सीरिया के लिए रवाना हो गयी।

(तफ़सीर अल-कुरआन की प्रस्तावना, अनवारूल-उलूम, खंड 20, पृष्ठ 333-334)

एक अन्य स्थान पर उन्होंने पूरे मामले को विस्तार से समझाने के बाद इसी प्रकार कहा है, "यह अल्लाह की बुद्धिमत्ता है कि यह घटना ठीक इसी प्रकार घटित हुई है।" यानी उन सरदारों की शहादत जिसके बारे में उन्होंने बात की थी। सबसे पहले हज़रत जैद शहीद हुए, उनके बाद हज़रत जाफ़र ने सेना की कमान संभाली, वह भी शहीद हुए, और उनके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने सेना की कमान संभाली, लेकिन वह भी मारे गए। सेना में अराजकता फैलने की आशंका थी तभी कुछ मुसलमानों के उकसावे पर हज़रत खालिद बिन वालिद ने झंडा अपने हाथ में ले लिया। "सर्वशक्तिमान अल्लाह ने उनके माध्यम से मुसलमानों को जीत दिलाई और वे सेना को सुरक्षित वापस ले आए।"

(अनवारूल उलूम, जिल्द 18, पृष्ठ 406)

इसका उल्लेख अभी भी जारी है। बाकी काम भविष्य में भी जारी रहेगा, अगर खुदा चाहेगा तो।

इस समय एक शहीद और कुछ वफ़ात पाने वालों का उल्लेख करना चाहता हूँ और उनका नमाज़ जनाज़ा गायब पढ़ाऊँगा। पिछले सप्ताह कराची में शहीद का जिक्र किया गया था। लईक अहमद चीमा साहब वे शहीद हो गये। वह चौधरी नजीर अहमद चीमा के पुत्र थे। वह 18 अप्रैल को शहीद हो गये। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन भीड़ ने उन पर हमला कर दिया और उन्हें बेरहमी से शहीद कर दिया। मृतक की उम्र सैंतालीस वर्ष थी।

विवरण रिपोर्ट के अनुसार, घटना वाले दिन खबर मिली थी कि विरोधी लोग अहमदिया हॉल के बाहर जुलूस के रूप में इकट्ठा होकर हंगामा कर रहे थे। वह शुक्रवार था। इस पर आदरणीय लईक अहमद चीमा साहब को स्थिति का आकलन करने के लिए भेजा गया। मृतक घटनास्थल पर पहुंचे। विरोधियों ने लईक चीमा साहब को पहचान लिया और उन पर हमला कर दिया तथा उन्हें कुछ दूर तक घसीटते हुए ले गए। वे वहां गए और ईंटों और पत्थरों से पीट-पीटकर उनकी बेरहमी से हत्या कर दी। इस अफरा-तफरी के बीच वहां मौजूद एक दुकानदार ने उन्हें पानी देने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने उसे जबरदस्ती पानी देने से रोक दिया। पुलिस आधे घंटे से अधिक देरी के बाद घटनास्थल पर पहुंची, जिसके बाद शव को अस्पताल ले जाया गया, जहां उसकी मौत की पुष्टि हुई।

अहमदियात का प्रवेश मृतक के परिवार में उनके परदादा, बहावलनगर जिले के चिश्तियान के चौधरी हकीम अली साहब के माध्यम से हुआ था, जिन्हें प्रथम खिलाफत के शासनकाल के दौरान निष्ठा की शपथ लेकर अहमदियात में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। दिवंगत शहीद ने ज्यादा शिक्षा नहीं ली थी, लेकिन उन्होंने अपनी खुद की वर्कशॉप खोल ली थी और कारों और मोटरसाइकिलों की मरम्मत का काम करते थे और उनका वर्कशॉप का कारोबार बहुत बड़ा हो गया था। उनके अच्छे नाम और प्रतिष्ठा के कारण विभिन्न सरकारी एजेंसियां भी उनसे अपने वाहनों की मरम्मत कराती थीं। इस कारण उनके सामाजिक संबंध भी बहुत व्यापक थे। अल्लाह की कृपा से शहीद मूसा एक परोपकारी व्यक्ति थे। पार्टी के कार्यों को पूरा करने और सेवा करने के लिए सदैव तत्पर। वे तहज्जुद और पांच समय की नमाज़ों के प्रति प्रतिबद्ध थे। वे नियमित रूप से अपने बच्चों को सामूहिक दुआ में अपने साथ ले जाते थे। वह कार्यशाला में काम करने वाले अहमदिया श्रमिकों और घर पर परिवार के सदस्यों की दुआओं पर नज़र रखते थे। काम में व्यस्त होने के बावजूद वे काम छोड़कर इबादत को प्राथमिकता देते थे। ऐसा नहीं है कि वे व्यापार में लगे हुए हैं। नहीं। आमतौर पर ऐसे व्यवसायी लोग और इस तरह व्यस्त रहने वाले लोग दुआओं पर ध्यान नहीं देते, लेकिन उन्होंने कभी भी छूटी हुई दुआ नहीं की। वे बहुत मिलनसार और प्रेमपूर्ण थे।

हर किसी का रिश्ता गोद लेने का था। खिलाफत के साथ एक विशेष संबंध था। वे निश्चित रूप से एम.टी.ए कार्यक्रम सुनते थे, विशेषकर मेरा प्रवचन, जो एम.टी.ए पर प्रसारित होता था। वह सदैव झूठी के लिए तथा पार्टी मामलों के लिए तत्पर रहते थे। शहादत की घटना से दो दिन पहले ही उन्हें अदालत में उनके विरोधियों ने काफी आक्रामक रुख अपनाते हुए धमकी दी थी।

उन्हें पहले भी धमकियां मिलती रही हैं। उन्हें पवित्र कुरआन से बहुत प्रेम था और पहले तो वह इसे अच्छी तरह से सुनाना नहीं जानते थे, लेकिन बुढ़ापे में उन्होंने पवित्र कुरआन सीखा और फिर नियमित रूप से इसका पाठ करते थे और रिकॉर्डिंग सुनते थे। वह अपनी कार्यशाला में पवित्र कुरआन की रिकॉर्डिंग रखते थे।

शहादत से पहले उनके एक मित्र ने उनसे उनकी बीमारी को देखते हुए रक्तदान की व्यवस्था करने का अनुरोध किया था। इस पर मृतक शहीद ने जवाब दिया, "मैं शुक्रवार की नमाज़ के बाद जाकर आपको अपना खून दूंगा, लेकिन भगवान को कुछ और ही मंजूर था और सर्वशक्तिमान खुदा ने उन्हें शहादत का दर्जा दिया।"

उनकी दो पत्नियाँ थीं। उनकी पहली पत्नी मरियम लाइक कहती हैं कि वह मेरी जरूरतों का ख्याल रखेंगे। वे बच्चों को अच्छी शिक्षा देते थे और नमाज़ अदा करने पर बहुत ध्यान देते थे।

दूसरी पत्नी का भी कहना है कि उसने दोनों का पालन-पोषण इस तरह किया कि हम दोनों बहनों की तरह रहती थीं। सांसारिक शिक्षा सीमित थी, लेकिन सामान्य ज्ञान प्रचुर था। उनकी बातचीत का विषय अक्सर भविष्यद्वक्ता होते थे। उन्होंने मुझे विभिन्न विषयों में प्रशिक्षण भी दिया। उनकी दूसरी पत्नी फराह लईक कहती हैं कि वह मुझे भी प्रशिक्षण देते थे। मेरे माता-पिता ने मुझे उस तरह शिक्षित नहीं किया जैसा कि मेरे पति ने हमारी शादी के बाद के दो वर्षों में किया है।

मृतक शहीद के भाई ने बताया कि उनका भाई बार-बार शहादत का जिक्र करता था और कहता था कि यह आशीर्वाद भाग्यशाली लोगों को मिलता है। वे अक्सर कहा करते थे कि यदि मेरे बलिदान का समय आया तो मैं सीने में गोली खा लूंगा। वह आगे कहते हैं कि चाहे परिस्थितियां कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों, उन्होंने हमेशा अपने भाइयों से कहा कि वे मस्जिद में जाएं और नमाज़ अदा करें क्योंकि यही समय साहस दिखाने का है।

उनका बेटा, हिज़कील अहमद बेचारा, सिर्फ बारह साल का है। उनका कहना है कि उनके पिता ने उन्हें न घबराने की सलाह दी थी, इसलिए उन्हें अपने पिता की शहादत की जरा भी चिंता नहीं हुई। और उन्होंने बहुत साहस और बहादुरी का परिचय दिया। उन्होंने बहुत धैर्य दिखाया है और कहा है कि वह भी अपने पिता की तरह बहादुर हैं और सीने पर गोली खाने के लिए तैयार हैं।

उनके परिवार में दो पत्नियाँ, सात बच्चे, एक बहन और एक भाई हैं। सबसे बड़ी बेटी सत्रह साल की है जबकि सबसे छोटी डेढ़ साल की है। और उसने सपने के आधार पर अपनी पत्नी को बताया कि उसने एक और बच्चा होने का सपना देखा है, और दूसरी पत्नी ने कहा कि जब मैंने परीक्षण कराया, तो सर्वशक्तिमान अल्लाह मुझे भी बच्चों का आशीर्वाद दे रहा था।

सोसायटी सर्किल के शिक्षक तौसीफ साहब कहते हैं। मृतक सामूहिक केंद्र में पांच समय की नमाज़ अदा करता था। जो लोग तहज्जुद का पालन करते हैं, जो स्वेच्छा से इबादत करते हैं, जो खिलाफत के प्रति आज्ञाकारी और आज्ञाकारी हैं, जो गरीबों की देखभाल करते हैं, जो अल्लाह के अधिकारों और लोगों के अधिकारों को पूरा करने की पूरी कोशिश करते हैं, और जो ज़रूरतमंदों की मदद करते हैं, यदि वे ज़रूरत में हों। अगर वे किसी की कार खराब देखते तो सड़क पर रुककर उसकी मदद करते। वे चुपचाप ज़रूरतमंदों की मदद करते थे। वे अच्छे कर्म करने में लगे रहते थे और हर तरह से निस्वार्थ थे। उन्हें सर्वशक्तिमान खुदा के अस्तित्व पर पूर्ण विश्वास था। उन्होंने अपने प्रत्येक कार्य और सफलता का श्रेय सर्वशक्तिमान खुदा की कृपा को दिया। कठिनाइयों और विरोध के बावजूद, उन्होंने हमेशा समय पर नमाज़ सेंटर में दुआ की। वह एक सज्जन व्यक्ति थे। यदि कोई गुस्से में उससे कुछ कहता तो वह चुप रहता। वे कभी पलटकर जवाब नहीं देते थे, बल्कि मुस्कराते हुए सभा से चले जाते थे।

इसी तरह सेक्टर माल और सदर हल्का ने लिखा है कि एक बार हमारी गणना गलत थी। गलती से हमने उन्हें बता दिया कि कुछ चन्दा बकाया है, इसलिए उन्होंने यह नहीं पूछा कि कोई बकाया है या नहीं और भुगतान कर दिया, और वह एक लाख रुपये की बड़ी रकम थी। बाद में उन्हें बताया गया कि हमारी गणना गलत थी। उन्होंने कहा, "यह आपका शेष नहीं है, बल्कि यह अतिरिक्त धन है।" उन्होंने कहा "नहीं, मैंने खुदा के मार्ग में जो कुछ दिया है, उसे मैं वापस नहीं लूंगा।" वह अपने परिवार के साथ विदेश जाने वाला था। मुरब्बी साहिब ने बताया कि जब तैयारियां पूरी हो गईं, तो एक

दिन पहले उन्होंने मुझसे कहा कि हम विदेश जा रहे हैं, जहां धार्मिक स्वतंत्रता है। मैं अपने बच्चों को अज्ञान और तकबीर को ऊंची आवाज़ में और अच्छे ढंग से कहना सिखाना चाहता हूँ, ताकि जब वे घर पर जमात के साथ नमाज़ पढ़ें, तो वे अज्ञान को ध्यान से कहें और फिर नमाज़ पढ़ें। अल्लाह तआला शहीदों के दर्जे को ऊंचा करे और उनके परिवारों को अपनी सुरक्षा में रखे।

शीघ्रता से दुश्मन पर कब्जा करो और रसद का प्रबंध करो।

आज भी एक रिपोर्ट है। कसूर के एक कस्बे में एक अहमदिया युवक शहीद हो गया। विवरण अभी उपलब्ध नहीं है।

अल्लाह तआला जल्द ही गलत काम करने वालों को पकड़कर उन्हें न्याय के कठघरे में लाए।

उनके लिए अब यही है: **اللَّهُمَّ مَرِّفَهُمْ كُلَّ مَرِّقٍ وَسَخِّفَهُمْ تَسْحِيفًا**

दूसरा उल्लेख है अमतुल हसन नूरी साहिबा का है डॉ. मसूदुल हसन नूरी साहब की पत्नी थीं? पिछले कुछ दिनों में उनका निधन हो गया है। वह हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो की पोती, हज़रत नवाब उम्मा-ए-हफ़ीज़ बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हो की पोती और मिर्ज़ा दाऊद अहमद साहिब की बेटी थीं। सर्वशक्तिमान अल्लाह की कृपा से वह एक मूसिया थी। वह मेरी चचेरी बहन भी थी।

डॉ. मसूदुल हसन साहब कहते हैं कि हज़रत खलीफतुल मसीह सालिस (रहम-हुल्लाह) ने स्वयं हमारा रिश्ता तय किया था। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे नहीं पूछा, न ही उन्होंने उसके माता-पिता या मेरे पिता से मेरे बारे में पूछा कि क्या मुझे उससे शादी करनी चाहिए। इस अवसर पर जब हज़रत खलीफतुल सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने कर्नल दाऊद साहब और उनकी पत्नी को रिश्ते के बारे में बताया, तो उन्होंने अनुरोध किया कि हम कुछ दिनों के लिए इस्तखारा करें। हज़रत रहमहुल्लाह ने कहा, "मैंने इस्तखारा कर लिया है।" अब आगे इस्तखारा की कोई ज़रूरत नहीं है। शादी करना। खैर, शादी हो गयी। ऐसा कहा जाता है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह की कृपा से, उनके विवाहित जीवन के इक्यावन वर्ष महान प्रेम, स्नेह, आज्ञाकारिता और मित्रता के रिश्ते से चिह्नित थे। वे दुआ और नमाज़ के प्रति प्रतिबद्ध थे। वह गरीबों के प्रति दयालु और मेहमाननवाज़ थीं, उनमें बहुत आस्था थी और कुछ वर्षों से उनमें पवित्र कुरआन का गहन अध्ययन करने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हो गई थी। वह अक्सर जमात के विभिन्न विद्वानों से प्रश्न पूछती थीं। उन्हें विभिन्न धर्मों के बारे में पढ़ने का भी शौक था।

तब डॉक्टर कहते हैं कि उन्होंने मेरी शिक्षा और मेरे जीवन में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। यदि कोई खुशी का अवसर होता या कहीं बाहर घूमने जाना होता और मुझे अस्पताल में आपातकालीन स्थिति का सामना करना पड़ता, तो मैं खुद को त्याग देता और कहता कि मैं वहां नहीं जाऊंगा। मैं पिछले तीन-चार वर्षों से काफी बीमार था। उन्होंने अपनी बीमारी और पीड़ा को बड़े धैर्य के साथ सहन किया, कभी उसे व्यक्त नहीं किया।

उनके बेटे डॉ. खालिद नूरी अमेरिका में रहते हैं। फज़ल उमर अस्पताल में वह भी अस्थायी वक्रफ़ पर आते हैं। वे कहते हैं कि मेरी माता जी जमाअत की एक सच्ची और समर्पित सेविका थीं। खिलाफ़त से उन्हें अत्यधिक प्रेम और श्रद्धा थी। वे कभी किसी भी व्यर्थ कार्य जैसे झूठ, चुगलखोरी, या निंदा आदि में संलग्न नहीं होती थीं। उन्होंने कुरआन को अर्थ सहित पूर्ण रूप से पढ़ा। हज़रत मसीह मौऊद की पुस्तकों का भी नियमित अध्ययन करती थीं। 'तज़िकरा' को बहुत ध्यान से पढ़ती थीं और सदैव अपने पास रखती थीं। ऐतिहासिक वस्तुओं को एकत्र करने का उन्हें विशेष शौक था और संग्रहालयों के देखरेखकर्ताओं और शोधकर्ताओं से इस विषय पर बातचीत करती थीं। इस रुचि में उन्होंने मुझे भी सम्मिलित कर लिया था। रब्बा के आस-पास, विशेषकर नदी के साथ की पहाड़ियों में उन्होंने कुछ चीज़ें देखीं, खोजीं, ज़मीन खुदवाई और जब लंदन आती थीं तो मुझसे इन्हीं बातों का ज़िक्र करती थीं। वे मुझे वे वस्तुएं दिखाती थीं। उनके बेटे आगे लिखते हैं कि वे सीमित संसाधनों वाले लोगों की शादियों में भरपूर आर्थिक सहयोग करती थीं और सभी कर्मचारियों के बच्चों की देखभाल करती थीं। लड़कियों को कुरआन पढ़ाती थीं। यह सुनिश्चित करती थीं कि उनकी समस्त आवश्यकताएं पूरी हों और लोगों से मिलते समय उनके चेहरे पर सदैव मुस्कान रहती थी।

उनकी बेटी मुबारका कहती हैं कि अम्मी को पढ़ने का अत्यधिक शौक था। हज़रत मसीह मौऊद की पुस्तकें हों या ईसाई धर्म अथवा हिन्दू धर्म से संबंधित पुस्तकें, वे विभिन्न विषयों का अध्ययन करती थीं और उनमें अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। वक्रफ़-ए-ज़िन्दगी करने वालों का वे अत्यधिक सम्मान करती थीं। मेरे पिताजी का भी सदैव उन्होंने साथ दिया। सेवानिवृत्ति के बाद जब पिताजी ने वक्रफ़ किया तो वे उनके साथ आ गईं, जबकि उन्हें उस समय भी अच्छे भौतिक लाभ वाली नौकरियाँ मिल

सकती थीं। वे कहती हैं कि मेरे पिता के ग़ैर-अहमदी संबंधी जब शोक व्यक्त करने आए तो उन्होंने कहा कि यह महिला परिवार को जोड़ने वाली थीं और सबसे अच्छे संबंध रखती थीं। फिर वे कहती हैं कि उन्होंने मुझे भी यह उपदेश दिया कि घर की बातें बाहर नहीं कहनी चाहिए और यदि कुछ कहना हो तो खलीफ़ा-ए-वक्रत को लिखो और जो वह उपदेश दें उस पर अवश्य अमल करो। और वह यह कहा करती थीं कि झगड़ों में समय व्यर्थ मत करो।

जलाल अहमद ख़ान, जो ताहर हार्ट के चालक हैं, कहते हैं कि वह बहुत नेक, शालीन, सहृदय और निर्धनों की सहायता करने वाली थीं। यात्रा के दौरान सदैव हमारा ध्यान रखती थीं और सफ़र में कुरआन का अनुवाद सुनने के लिए सीडी चलवाती थीं और सम्पूर्ण यात्रा में उसे ही सुनती थीं। वे आगे कहते हैं कि उन्होंने मेरी पत्नी और बच्चों का भी बहुत ध्यान रखा। जब हम बड़े शहरों में जाते थे तो दुकानदार, विशेषकर रावलपिंडी और इस्लामाबाद के दुकानदार, जो उन्हें पहचानते थे क्योंकि उनका वहाँ आना-जाना होता था, पूछा करते थे कि बहुत दिनों बाद आई हैं। पहले जब उन्होंने पूछा तो उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया कि अब हम रब्बा स्थानांतरित हो गए हैं जहाँ जमाअत का अस्पताल है और मेरे पति वहाँ कार्य करते हैं। बिना किसी भय के उन्होंने यह बात बता दी। हम चिंतित होते थे। अल्लाह तआला उन्हें क्षमा करे और उन पर दया का व्यवहार करे।

अब अगला उल्लेख है

आदरणीय हसन सानोगो अबूबक्र साहिब जो बुर्किना फासो में स्थानीय प्रचारक थे। कुछ दिन पूर्व 63 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। "हम सब अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर लौट कर जाना है।" रमज़ान के महीने में वे प्रतिदिन जोला भाषा में कुरआन का पाठ करते थे और यह पाठ रेडियो इस्लामिक अहमदिया पर प्रसारित होता था। निधन से एक दिन पूर्व, 22 मार्च को भी उन्होंने पाठ किया। प्रारंभिक शिक्षा बुर्किना फासो के शहर बोबो डियूलासो में प्राप्त की। फिर उच्च शिक्षा के लिए मॉरिटानिया गए और वहाँ से उच्च शिक्षा प्राप्त कर मिस्र की जामिया अल-अज़हर विश्वविद्यालय गए। वहाँ उन्होंने अरबी भाषा में प्रवीणता और धाराप्रवाह बोलने की अद्भुत क्षमता प्राप्त की। जब वे लौटे तो अरबी भाषा में दक्ष हो चुके थे और प्रभावशाली भाषण करते थे। अल-अज़हर से लौटने के बाद वे आइवरी कोस्ट में रहने लगे और वहाँ एक विद्यालय स्थापित किया जिसमें सैकड़ों छात्र पढ़ते थे। अपने ओजस्वी वक्तव्य और उत्कृष्ट शैली के कारण वे आइवरी कोस्ट में प्रसिद्ध हो गए, हालांकि उस समय तक वे अहमदी नहीं हुए थे।

जब अहमदी प्रचारकों ने उस क्षेत्र में प्रचार किया तो विरोधियों ने अहमदियों से बहस करने के लिए अबू बकर साहिब को प्रस्तुत किया। उन्हें अपनी भाषण कला पर बहुत गर्व था। वे स्वयं कहते हैं कि जिस दिन बहस होनी थी, मैं बड़े अभिमान से एक लंबा चोगा पहनकर आया था, सोच कर कि आज अहमदियों को पराजित कर प्रसिद्धि और उच्च स्थान प्राप्त करूंगा। लेकिन अल्लाह ने उनकी प्रकृति में सच्चाई की भावना रखी थी। उन्हें शीघ्र ही ज्ञात हो गया कि सत्य अहमदियों के पास है और तर्क भी उनके ही पास है। उन्हें "अल-क़ौल अल-सरीह" नामक पुस्तक दी गई, जिसका अध्ययन करने के बाद आबिदजान में जमाअत के प्रचारक अब्दुर्रहमान कोनाते साहिब से उनका संवाद हुआ। अल्लाह ने उन्हें मार्गदर्शन प्रदान किया और उन्होंने साहस के साथ अहमदियत को स्वीकार कर लिया। उनका बईअत का यह वाक्या वर्ष 1986 का है। उस समय वे केवल 24-25 वर्ष के थे।

बैअत के बाद उन्होंने अपना विद्यालय और अपनी प्रतिष्ठा सब कुछ त्याग दिया। उस समय आइवरी कोस्ट में फ्रेंच भाषी अहमदी छात्रों के लिए एक लघु पाठ्यक्रम आयोजित किया जाता था। उसमें प्रवेश लेकर उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया। बहुत शीघ्र ही वे जमाअत के श्रेष्ठ प्रचारक बन गए। अपनी मातृभाषा जोला में भाषण देने में उन्हें विशेष दक्षता प्राप्त थी। वे ऊँचे स्तर में प्रभावशाली भाषण देते थे और श्रोताओं को शीघ्र ही प्रभावित कर लेते थे। वर्ष 1990 में इदरीस साहिब की नियुक्ति बुर्किना फासो में हुई। उन्होंने अबूबक्र सानोगो साहिब को आइवरी कोस्ट से बुलाने की अनुमति प्राप्त कर ली। वहाँ उन्होंने प्रचार के क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्य किया और जोला भाषी क्षेत्रों में शीघ्र ही सफलता मिलने लगी। वहाँ कई नई जमाअतें स्थापित हुईं।

1999 में बुर्किना फासो के डोरी क्षेत्र में उन्हें भेजा गया, जहाँ हमारी शहादतें भी हुई थीं। इस क्षेत्र में अरबी बोली जाती है। वहाँ के मौलवी अरबी ज्ञान दिखाकर लोगों को प्रभावित करने का प्रयास करते थे। उन्होंने बड़े-बड़े मौलवियों से बहस की और उन्हें पराजित किया। दूर-दराज़ के गाँवों में प्रचार किया, यहाँ तक कि ग़ैर-अहमदी मौलवी उनके सामने आने से कतराने लगे। वे उस क्षेत्र में एक बड़े आलिम और

EDITOR SHAIKH MUJAHID AHMAD Editor : +91-9915379255 e-mail : badarqadian@gmail.com www.akhbarbadr.in	REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUN- HIN/2016/70553	MANAGER : SHAIKH MUJAHID AHMAD Mobile : +91-9915379255 e-mail: managerbadrqnd@gmail.com www.alislam.org/badr
	Weekly BADAR Qadian Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA POSTAL REG. No. GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 29 May 2025 Issue No. 22	

शिक्षक के रूप में प्रसिद्ध हो गए। वहाँ बहुत अधिक संख्या में अहमदी जमाअतें स्थापित हुईं। इसी प्रकार 1991 में उनका संपर्क इमाम इब्राहीम बदीगा साहिब शहीद महदी आबाद और उनके साथियों से हुआ, जिन्होंने शीघ्र ही बईअत की और बाद में 2023 में शहादत प्राप्त कर अहमदियत के चमकते सितारे बन गए।

2002 में बोबो डियूलासो में अहमदियत के पहले रेडियो स्टेशन की स्थापना हुई, तो अबू बकर साहिब पहले नंबर के वक्ता बने। वे अत्यंत उत्साही प्रचारक थे। उनके प्रचार से लाखों लोगों तक अहमदियत का संदेश पहुँचा और हज़ारों को अहमदियत को अपनाने का सौभाग्य मिला। कई वर्षों तक राष्ट्रीय कार्यकारिणी में सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। निधन के समय वे सचिव संबंध एवं विवाह थे। 2012 में उनकी नियुक्ति माली के शहर सिकासो में हुई, जहाँ उन्हें असाधारण सेवाओं का अवसर मिला। 2019 में जब बोबो डियूलासो में कुछ युवकों ने जमाअत के विरुद्ध उपद्रव किया तो मैंने उन्हें वहाँ पुनः नियुक्त किया और उन्हें राष्ट्रपति जमाअत बनाया। उन्होंने साहस, बुद्धिमत्ता, परिश्रम और प्रार्थना से उस उपद्रव को समाप्त किया और सबने पुनः बईअत की।

उत्तराधिकारियों में माता, पत्नी, भाई, तीन बच्चे तथा पौत्र-पौत्रियाँ शामिल हैं।

उनकी पत्नी आयशा कोलीबाली कहती हैं कि वे हर समय इस्लाम की सेवा के लिए तैयार रहते थे। स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी सदैव जमाअती कार्यक्रमों और प्रचार यात्रा को प्राथमिकता देते थे। कभी-कभी मैं उन्हें कहती कि आप बीमार हैं, कुछ आराम कर लें तो वे कहते कि मैंने अपना जीवन समर्पित किया है और अंतिम सांस तक धर्म की सेवा करता रहूँगा। कहती हैं कि हमारी शादी के बाद से मैंने कभी यह नहीं देखा कि उन्होंने कहा हो कि आज मैं बीमारी की वजह से तहज्जुद नहीं पढ़ सकता। जब भी कोई जमाअती समस्या या सेवा आती, वे तुरंत मदद करते, चाहे उसके बाद उन्हें बीमारी हो जाए। मिलने-जुलने वालों, संबंधियों, और पड़ोसियों से अत्यंत सद्भाव और प्रेम से मिलते थे। एक आदर्श व्यक्तित्व के स्वामी थे। कुरआन से अत्यधिक प्रेम करने वाले और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे प्रेमी थे।

यह एक वक्रफ-ए-ज़िन्दगी और मुबल्लिग के लिए उदाहरण है जिसे हमारे सभी मुबल्लिगों को सामने रखना चाहिए। अल्लाह तआला ऐसे वक्रफ की रूहों को जमाअत में निरंतर प्रदान करता रहे।

इदरीस शाहिद साहिब, पूर्व अमीर जमाअत बुर्किना फासो लिखते हैं कि उन्होंने बहुत परिश्रम और कुशलता से प्रचार का कार्य किया। मुस्कराता चेहरा, सुदृढ़ तर्क और सेवा का सर्वोच्च स्तर बनाए रखने का प्रयत्न करते रहते थे। स्थानीय प्रचारक दर अबुल हसन कहते हैं कि अबू बकर साहिब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे प्रेमी थे। एक बार सूरु अहज़ाब की आयत 38 की व्याख्या करते हुए उन्होंने जब हज़रत जैनब से विवाह के प्रसंग में गैर-अहमदी मौलवियों के निराधार बयानों का उल्लेख किया, तो उनकी आंखों से आँसू निकल आए कि किस प्रकार इन लोगों ने अपनी मूर्खता और अशोभनीय बातों को रहमतुल-लिल-आलमीन से जोड़ने का दुस्साहस किया है। अब जब यही लोग कुछ कहते हैं तो वह निंदा नहीं, लेकिन यदि अहमदी सम्मानपूर्वक नाम लें तो वह निंदा बन जाती है। फिर वे कहते हैं कि यात्राओं के दौरान भी तहज्जुद का विशेष पालन करते। ख़िलाफ़त से अत्यधिक प्रेम रखते। यदि कोई जमाअत के विरुद्ध कुछ कहता तो वे तलवार की तरह सामने आ जाते। कभी

किसी से द्वेष या शत्रुता नहीं रखते थे। अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद करे। उनकी संतान को उनकी नेकीयों को आगे बढ़ाने की शक्ति दे। उन्हें उनकी दुआओं का वारिस बनाए।

★ ★ ★

दारुस्सनाअत कादियान (Ahmadiyya Vocational Training Centre) अन्हो ining Centre) में वर्ष 2024-2025 के प्रवेश लिए दाखिला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ की मंजूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing, Electrician, Welding, Motor Vehicle, AC & Refrigeration, Diesel Mechanic, Computer Applications कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतज़ाम उपलब्ध है। रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेकनीकल कोर्स करने के इच्छाशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Development की क्लास भी ली जाती है। नए सेशन 2024-2025 के लिए दाखिला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी। अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com

9872725895, 8077546198

(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY

थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक कादियान

सभी प्रकार के शारीरिक टेस्ट (खून, मल, बलगम इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.



चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश कादियान, लुकमान अहमद बाजवा और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :- +91-9646561639, +91-8557901648